

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 रायपुर, प्रकाशन-सोमवार 26 जनवरी 2026 वर्ष-24 अंक-21 मूल्य रु. 12/- कुल पृष्ठ - 12 www.krishakjagat.org पृष्ठ -1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें



अंदर पढ़िये...



कृषक जगत के सुधी पाठकों, विज्ञापन दाताओं, प्रतिनिधियों एवं शुभचिंतकों को **गणतंत्र दिवस 2026** की हार्दिक शुभकामनाएं।
- कृषक जगत परिवार

किसानों की समृद्धि के लिए सिंचाई परियोजनाओं का सुदृढ़ होना आवश्यक : श्री साय

लंबे समय से अधूरी सिंचाई परियोजनाओं को पूर्ण करने को लेकर मुख्यमंत्री सख्त

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने मंत्रालय में जल संसाधन विभाग के अधिकारियों की उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक ली। बैठक में विभागीय कार्यों, संचालित परियोजनाओं तथा प्रस्तावित सिंचाई परियोजनाओं की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों के हित में लगातार बड़े निर्णय ले रही है और किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य की दिशा में हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सिंचाई सुविधाओं का विस्तार अत्यंत आवश्यक है। मुख्यमंत्री श्री साय ने निर्देश दिए कि लंबे समय से लंबित परियोजनाओं को अटल सिंचाई योजना में शामिल किया गया है, इन्हें समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण किया जाए। उन्होंने दो टूक कहा कि निर्माण कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने जानकारी लेते हुए कहा कि आगामी तीन वर्षों में पूर्ण की जाने वाली परियोजनाओं की विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में किसानों की भूमिका सबसे



जल संसाधन विभाग की उच्च स्तरीय समीक्षा

महत्वपूर्ण है। खेती के बढ़ते रकबे और किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सिंचाई परियोजनाओं का सुदृढ़ होना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए बजट की कोई कमी नहीं है और इसके लिए पृथक बजटीय प्रावधान किया गया है। इन

परियोजनाओं के पूर्ण होने से प्रदेश में सिंचित रकबा बढ़ेगा और किसानों की उपज में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने जशपुर जिले के किसानों के मध्यप्रदेश अध्ययन भ्रमण का उल्लेख करते हुए कहा कि वहां आधुनिक तकनीक के माध्यम से सिंचाई

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिंचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।

(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानों आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेक्टर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज



जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
1.3, 1.5 मील (0.33, 0.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी



नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटिंग में उपलब्ध

जैन ड्रिप
प्रति बूट, फसल भरपूर!

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jais@jains.com; वेबसाइट: www.jains.com



सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!

मक्का एवं दलहन प्रोत्साहन के लिए 30 करोड़ से अधिक की राशि मंजूर

श्री नेताम ने केन्द्रीय कृषि मंत्री से की मुलाकात

नई दिल्ली। छत्तीसगढ़ के कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री ने नई दिल्ली में केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से उनके शासकीय निवास कार्यालय में सौजन्य मुलाकात की। श्री नेताम ने राज्य में दलहन एवं तिलहन फसलों के विकास से जुड़ी प्रमुख मांगों को रखा। बैठक में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों पर केन्द्रीय स्तर से स्वीकृति प्रदान की गई, जिससे राज्य के कृषि क्षेत्र को नई मजबूती मिलेगी। कृषि मंत्री श्री नेताम ने इसे राज्य के किसानों के हित में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए कहा कि केन्द्र-राज्य के समन्वय से राज्य में मक्का एवं दलहन-तिलहन उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा।

श्री नेताम ने इस मौके पर केन्द्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से कृषि विकास, आधुनिक कृषि उपकरणों सहित विभिन्न प्रस्ताव रखे। केन्द्रीय मंत्री श्री चौहान ने राज्य में मक्का फसल प्रोत्साहन

हेतु 6 करोड़ 32 लाख 50 हजार और दलहन-तिलहन फसलों के प्रोत्साहन के लिए 24 करोड़ 10 लाख रूपए की स्वीकृति प्रदान की है। इससे राज्य में 55 हजार हेक्टेयर में मक्का फसल का प्रदर्शन होगा, जिससे लगभग 7 हजार किसान लाभान्वित होंगे। इसी प्रकार दलहन फसलों के अंतर्गत उड़द एवं मूंग के प्रोत्साहन के लिए 24 हजार 100 हेक्टेयर में फसल प्रदर्शन हो सकेगा, जिससे राज्य के लगभग 28 हजार तक के किसान लाभान्वित होंगे।

यहां यह उल्लेखनीय है कि श्री रामविचार नेताम ने केन्द्रीय मंत्री से मुलाकात के दौरान जानकारी दी कि राज्य में परंपरागत कृषि विकास योजना के तहत वर्ष 2025-26 के लिए 27 करोड़ 68 लाख का प्रस्ताव कृषि मंत्रालय भारत सरकार को स्वीकृति के लिए भेजा गया है। श्री नेताम ने केन्द्रीय मंत्री से उक्त लंबित की स्वीकृति का आग्रह किया।



केन्द्रीय आम बजट 2026-27 से आशा और उम्मीदें

कृषि क्षेत्र को नई दिशा देने का अवसर : संरचनात्मक सुधार और नवाचार पर जोर जरूरी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत की कृषि व्यवस्था आज भी देश की लगभग 45 प्रतिशत आबादी को रोजगार देती है, लेकिन राष्ट्रीय सकल मूल्य संवर्धन (GVA) में इसका योगदान मात्र 18 प्रतिशत के आसपास है। यह स्थिति कृषि क्षेत्र में कम उत्पादकता, सीमित मूल्य संवर्धन और लंबे समय से चली आ रही संरचनात्मक चुनौतियों को दर्शाती है।

बीडीओ इंडिया के पार्टनर - एग्रीकल्चर, गवर्नमेंट एडवाइजरी श्री सौम्यक बिस्वास ने कहा कि छोटे और बिखरे हुए भूमि जोत, सहायक क्षेत्रों में अपर्याप्त निवेश, कटाई के बाद होने वाला भारी नुकसान और अनुसंधान के लिए सीमित संसाधन कृषि विकास में बड़ी बाधाएँ बने हुए हैं। ऐसे में आने वाला केन्द्रीय बजट 2026 कृषि क्षेत्र की दीर्घकालिक मजबूती के लिए एक अहम अवसर प्रदान कर सकता है।

उन्होंने कहा कि बजट में कृषि अनुसंधान और जलवायु-स्मार्ट खेती को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके लिए DARE (कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग) के बजट में



वृद्धि, पीपीपी मॉडल के जरिए नवाचार को बढ़ावा तथा सूक्ष्म सिंचाई और पुनर्योजी (रीजनरैटिव) खेती जैसी जलवायु-संवेदनशील पद्धतियों को प्रोत्साहन आवश्यक है।

श्री सौम्यक बिस्वास के अनुसार, पशुपालन, मत्स्य पालन और बागवानी जैसे सहायक कृषि क्षेत्रों को मजबूत करने के साथ-साथ कोल्ड चेन और प्रोसेसिंग अवसंरचना का विस्तार किया जाए, तो किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। साथ ही, किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को बाजार से जोड़ने वाली उत्पाद रणनीतियों और क्रेडिट गारंटी के माध्यम से सशक्त बनाना जरूरी है, जिससे छोटे किसान मूल्य श्रृंखला का हिस्सा बन सकें। उन्होंने यह भी कहा कि बागवानी, दलहन और तिलहन फसलों की ओर विविधीकरण को प्रोत्साहित करने से अत्यधिक पानी पर निर्भर फसलों पर दबाव कम होगा। वहीं, डिजिटल उपकरणों पर सब्सिडी, साझा तकनीकी केंद्र और रियायती कृषि सलाह सेवाओं के माध्यम से तकनीक को तेजी से अपनाने से छोटे किसानों की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

किसानों को बड़ी उम्मीदें, कृषि बनेगी विकसित भारत की मजबूत नींव

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश जैसे-जैसे केन्द्रीय बजट 2026 की ओर बढ़ रहा है, वैसे-वैसे कृषि और ग्रामीण विकास को लेकर उम्मीदें भी बढ़ती जा रही हैं। यह समय 2030 के कृषि लक्ष्यों की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण है और साथ ही विकसित भारत 2047 के सपने को साकार करने की मजबूत आधारशिला रखने का अवसर भी है। विशेषज्ञों का मानना है कि देश के समग्र विकास में कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की भूमिका सबसे अहम है।

इस संदर्भ में बायर के कंट्री डिविजनल हेड (क्रॉप साइंस) श्री साइमन विबुश ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए मजबूत आय और ऋण सहायता, स्थिर और स्पष्ट व्यापार नीतियाँ, तथा भंडारण, परिवहन, मूल्य संवर्धन और कटाई के बाद की सुविधाओं में निरंतर निवेश की आवश्यकता है, ताकि इसका सीधा लाभ किसानों तक पहुँचे।

उन्होंने कहा कि इसके साथ-साथ उन्नत बीज, सुरक्षित फसल संरक्षण, डिजिटल खेती और जलवायु के अनुकूल कृषि तकनीकों को तेजी से अपनाना जरूरी है। साइमन विबुश के अनुसार, विकसित भारत 2047 के विज्ञान के अनुरूप यदि ये कदम उठाए जाते हैं, तो भारतीय कृषि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सकती है और किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ ग्रामीण समृद्धि का मजबूत आधार तैयार होगा।

पशुधन और मत्स्य क्षेत्र को निर्यात में नई मजबूती की उम्मीद : श्री गुलाटी

केन्द्रीय बजट 2026-27 से देश के पशुधन और मत्स्य पालन क्षेत्र को विकास के अगले चरण में प्रवेश दिलाने की उम्मीद जताई जा रही है। भैंस मांस और समुद्री उत्पादों के वैश्विक बाजार में भारत की बढ़ती भागीदारी के बीच उद्योग जगत को बजट में निर्यात समर्थन को प्राथमिकता दिए जाने की अपेक्षा है।

सीएलएफएमए इंडिया के चेयरमैन श्री दिव्या कुमार गुलाटी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक आसान पहुँच, वैश्विक मानकों के अनुरूप गुणवत्ता एवं प्रमाणन व्यवस्था, तथा अमेरिका, यूरोपीय संघ और आसियान जैसे उच्च-मूल्य बाजारों के लिए ब्रांडिंग सहयोग बेहद जरूरी है।

उन्होंने कहा कि निर्यात को टिकाऊ बनाए रखने के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत निरंतर और बढ़ा हुआ समर्थन आवश्यक है। श्री गुलाटी ने यह भी बताया कि पिछले बजट में जलीय कृषि से जुड़े कुछ इनपुट्स पर बेसिक कस्टम ड्यूटी में कटौती के बाद, इस बजट में तालाब और हैचरी उपकरण, गुणवत्तापूर्ण फीड, कोल्ड-चेन और प्रोसेसिंग अवसंरचना पर अतिरिक्त शुल्क राहत तथा जीएसटी के युक्तिकरण की उम्मीद है।



किसानों की समृद्धि के लिए...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

को प्रभावी ढंग से संचालित होते देखकर किसान काफी उत्साहित हुए हैं। उन्होंने निर्देश दिए कि जिन राज्यों में सिंचाई क्षेत्र में बेहतर नवाचार किए जा रहे हैं, वहाँ छत्तीसगढ़ के किसानों का भी अध्ययन भ्रमण कराया जाए, ताकि वे नई तकनीकों और कार्यप्रणालियों से अवगत हो सकें।

बैठक में अधिकारियों ने जानकारी दी कि आगामी तीन वर्षों में लगभग 10 हजार करोड़ रुपये की लागत से 14 सिंचाई परियोजनाओं को चरणबद्ध रूप से पूर्ण करने की योजना है, जिससे

लगभग 70 हजार हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। इनमें 4,800 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली चार प्रमुख परियोजनाओं का मार्च और मई माह में भूमिपूजन प्रस्तावित है। इन परियोजनाओं में बस्तर जिले की देउरगांव बैराज सह उद्दहन सिंचाई परियोजना, मटनार बैराज सह उद्दहन सिंचाई परियोजना, रायपुर जिले के आरंग विकासखंड में महानदी पर मोहमेला-सिरपुर बैराज योजना तथा गरियाबंद जिले की सिकासार जलाशय से कोडार जलाशय लिंक परियोजना

शामिल हैं।

इसी प्रकार अटल सिंचाई योजना के अंतर्गत 115 लंबित परियोजनाओं के लिए 346 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है, जिनके माध्यम से लगभग 11 हजार हेक्टेयर अतिरिक्त सिंचाई क्षमता का विकास किया जाएगा।

बैठक में अंतरराज्यीय जल विवादों के समाधान पर भी चर्चा की गई। आगामी तीन वर्षों में महानदी जल विवाद, पोलावरम बांध के डुबान क्षेत्र तथा समक्या बैराज से संबंधित मामलों के निपटारे के लिए ठोस प्रयास किए जाने पर सहमति बनी।

दावोस में यूपीएल



वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम दावोस में दूसरे दिन नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री मध्यप्रदेश श्री राकेश शुक्ला के साथ प्रतिनिधिमंडल ने यूपीएल के चेयरमैन और ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर श्री जय श्राफ से कृषि, खाद्य प्रसंस्करण इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में निवेश संबंधी चर्चा की। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा श्री मनु श्रीवास्तव, प्रमुख सचिव श्री मनीष सिंह, प्रमुख सचिव औद्योगिक नीति एवं निवेश श्री राघवेंद्र सिंह तथा जनसंपर्क आयुक्त श्री दीपक सक्सेना उपस्थित थे।

देश में रबी का रकबा 652 लाख हेक्टेयर से अधिक पहुंचा



नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि मंत्रालय द्वारा 16 जनवरी 2026 तक रबी फसलों के जारी आंकड़ों के अनुसार देशभर में फसलों की बुआई में उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

मंत्रालय के अनुसार, इस वर्ष अब तक कुल 652.33 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में रबी फसलों की बुआई हो चुकी है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि (631.45 लाख हे.) की तुलना में 20.88 लाख हे. अधिक है।

गेहूँ और तिलहन में विस्तार

रबी सीजन की प्रमुख फसल गेहूँ का रकबा बढ़कर 334.17 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 6.13 लाख हेक्टे. अधिक है।

इसी तरह तिलहन फसलों के तहत क्षेत्रफल में 3.53 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। खासतौर पर सरसों, अलसी, कुसुम और मूंगफली की बुआई में बढ़ोतरी देखने को मिली है।

दालों का रकबा भी बढ़ा

इस वर्ष दालों का कुल रकबा 137.00 लाख हेक्टेयर रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.82

लाख हेक्टेयर अधिक है। चना और मसूर की बुआई में बढ़त दर्ज की गई है। श्री अन्न और मोटे अनाज में स्थिरता श्री अन्न एवं मोटे अनाज के तहत बुआई क्षेत्र 58.72 लाख हेक्टेयर रहा, जिसमें कुल मिलाकर 2.79 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई। मक्का और जौ में अच्छा विस्तार हुआ है।

प्रमुख रबी फसलों की बुआई 16 जनवरी 2026 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुआई 2025-26	2024-25
गेहूँ	312.35	334.17	328.04
चावल	42.93	25.58	20.98
दालें	140.42	137.00	133.18
चना	100.99	95.88	91.22
मसूर	15.13	18.12	17.66
मोटे अनाज	55.33	58.72	55.93
ज्वार	24.62	22.54	23.85
मक्का	23.61	27.55	25.05
तिलहन	86.78	96.86	93.33
सरसों	79.17	89.36	86.57
मूंगफली	3.69	3.52	3.37
अलसी	1.93	1.99	1.76
कुल	637.81	652.33	631.45

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।
स्रोत : कृषि मंत्रालय

राज्यपाल ने श्री जैन को मुख्य सूचना आयुक्त पद की शपथ दिलाई



रायपुर। राज्यपाल श्री डेका ने श्री अमिताभ जैन को मुख्य सूचना आयुक्त एवं श्री अग्रवाल और श्री मिश्रा को राज्य सूचना आयुक्त पद की शपथ दिलाई। समारोह में छत्तीसगढ़ राज्य सूचना आयोग के नवनियुक्त मुख्य सूचना आयुक्त श्री अमिताभ जैन एवं राज्य सूचना आयुक्त श्री उमेश कुमार अग्रवाल एवं डॉ. शिरीष चंद्र मिश्रा को राज्य सूचना आयुक्त के पद की शपथ दिलाई। मुख्य सचिव श्री विकास शील ने शपथ प्रक्रिया पूर्ण कराई।

शपथ ग्रहण समारोह में राजस्व, खेल एवं युवा कल्याण, आपदा प्रबंधन मंत्री श्री टंकराम वर्मा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, और अनुसूचित जाति विकास मंत्री श्री गुरु खुशवंत साहब, विधायक श्री पुरंदर मिश्रा, पुलिस महानिदेशक श्री अरूण देव गौतम, राज्यपाल के

सचिव डॉ. सी.आर.प्रसन्ना, मुख्यमंत्री के सचिव श्री सुबोध सिंह, राज्य शासन के विभिन्न विभागों के प्रमुख सचिव एवं सचिव, छत्तीसगढ़ मानव अधिकार आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री गिरिधारी नायक, राज्य सूचना आयोग के आयुक्त श्री आलोक चंद्रवंशी, राज्य सूचना आयोग के पूर्व आयुक्त श्री मनोज त्रिवेदी, श्री अशोक अग्रवाल, श्री धनवंदर जायसवाल, राज्य सूचना आयोग के सचिव श्री नीलम नामदेव एका सहित गणमान्य नागरिक एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

ज्ञात हो कि नवनियुक्त मुख्य सूचना आयुक्त श्री अमिताभ जैन सेवानिवृत्त आईएएस पूर्व मुख्य सचिव रहे हैं।

राज्य सूचना आयुक्त श्री उमेश अग्रवाल सेवानिवृत्त आईएएस हैं तथा डॉ.शिरीष चंद्र मिश्रा पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं।

छत्तीसगढ़ तेजी से बढ़ रहा समृद्धि की ओर : श्री साय

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा है कि छत्तीसगढ़ तेजी से समृद्धि की ओर बढ़ रहा है। नक्सलवाद, जो कभी छत्तीसगढ़ के लिए गंभीर चुनौती था, अब तेजी से समाप्ति की ओर अग्रसर है। प्रदेश के हर क्षेत्र में अब तेजी से विकास कार्य किए जा रहे हैं। श्री साय जशपुर जिले के कोतबा में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कार्यक्रम में लगभग 51.73 करोड़ रुपए लागत के विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। मुख्यमंत्री ने

सड़कों को मंजूरी मिल चुकी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने छत्तीसगढ़ की अग्रणी भूमिका रहेगी। वर्ष 2047 तक छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य की श्रेणी में लाने के लिए विजन डॉक्यूमेंट तैयार किया गया है। नई औद्योगिक नीति के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं, छत्तीसगढ़ को अब तक 7.83 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव मिल चुके हैं। जिन पर तेजी से काम हो रहा है।



कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री की अधिकांश गारंटी पूरी कर दी गई है। लोगों को इसका सीधा फायदा मिल रहा है। उन्होंने कहा कि किसानों को बेहतर सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के लिए राज्य के सिंचाई परियोजनाओं के मरम्मत एवं विकास के लिए लगभग 3 हजार करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 750

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या साय, विधायक श्रीमती गोमती साय, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सालिक साय, माटीकला बोर्ड अध्यक्ष श्री शंभूनाथ चक्रवर्ती, अत्यावसायी सहकारी वित्त एवं विकास निगम के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार बेसरा, पूर्व विधायक श्री भरत साय, सहित अनेक जनप्रतिनिधि बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ की बुधरी ताती एवं गोडबोले दम्पति को मिला पद्मश्री

रायपुर। केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2026 के प्रतिष्ठित पद्म पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। छत्तीसगढ़ के लिए यह अत्यंत गौरवपूर्ण का क्षण है कि राज्य की तीन विशिष्ट हस्तियों का चयन पद्मश्री सम्मान हेतु किया गया है। समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दंतेवाड़ा की समाजसेविका बुधरी ताती तथा चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में दशकों से निस्वार्थ कार्य कर रहे डॉ. रामचंद्र त्रयम्बक गोडबोले एवं सुनीता गोडबोले को पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत किया जाएगा। डॉ. गोडबोले दंपति को यह सम्मान संयुक्त रूप से प्रदान किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने उक्त तीनों विभूतियों को पद्मश्री पुरस्कार के लिए चयनित होने पर बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री ने कहा है कि यह छत्तीसगढ़ के लिए गौरव की बात है। तीनों विभूतियों ने अपने सेवा भावना, मानवीय संवेदना और सामाजिक प्रतिबद्धता से छत्तीसगढ़ को गौरवान्वित किया है। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर घोषित पद्म पुरस्कारों की सूची में छत्तीसगढ़ की इन तीनों विभूतियों का नाम शामिल होना राज्य के लिए सम्मान और गौरव का विषय है। विशेष रूप से यह उल्लेखनीय है कि सम्मानित सभी हस्तियां बस्तर अंचल के दूरस्थ एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में वर्षों से सेवा कार्य कर रही हैं।

बस्तर की 'बड़ी दीदी' बुधरी ताती



दंतेवाड़ा जिले के हीरानार ग्राम की निवासी बुधरी ताती को महिला सशक्तिकरण, आदिवासी उत्थान एवं समाजसेवा के लिए पद्मश्री सम्मान प्रदान किया जाएगा। वर्ष 1984 से वे निरंतर वनांचल क्षेत्रों में नशामुक्ति, साक्षरता अभियान, सामाजिक जागरूकता तथा महिलाओं एवं बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। बुधरी ताती अभी तक 500 से ज्यादा महिलाओं को आत्मनिर्भर बना चुकी हैं। बुधरी ताती को छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन आदिवासी बच्चियों की शिक्षा, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने तथा वृद्धजनों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है। उनके समर्पण और स्नेहभाव के कारण स्थानीय लोग उन्हें सम्मानपूर्वक 'बड़ी दीदी' कहकर संबोधित करते हैं।

गोडबोले दंपति

चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए डॉ. रामचंद्र त्रयम्बक गोडबोले



एवं उनकी धर्मपत्नी सुनीता गोडबोले को संयुक्त रूप से पद्मश्री सम्मान से नवाजा जाएगा। आयुर्वेद चिकित्सक

डॉ. गोडबोले और उनकी पत्नी पिछले 37 वर्षों से अधिक समय से बस्तर एवं अबुलमाड जैसे अत्यंत दुर्गम आदिवासी क्षेत्रों में निःशुल्क चिकित्सा सेवा प्रदान कर रहे हैं।

स्वास्थ्य

जागरूकता, कुपोषण उन्मूलन और प्राथमिक उपचार को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से दोनों ने 'ट्रस्ट फॉर हेल्थ' के माध्यम से ऐसे गांवों तक इलाज पहुंचाया है, जहां सड़क, बिजली और मोबाइल नेटवर्क जैसी मूलभूत सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं।

उद्यानिकी एवं कृषि विभाग प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

13वें नेशनल रिव्यू कॉन्फ्रेंस में मिला पुरस्कार



रायपुर। छत्तीसगढ़ को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना तथा पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य घोषित किया गया है। उद्यानिकी एवं कृषि विभाग को संयुक्त रूप से प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

छत्तीसगढ़ सरकार की इस उपलब्धि पर मुख्यमंत्री और कृषि मंत्री ने विभाग के अधिकारियों को बधाई दी है। यह पुरस्कार राज्य के किसानों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है और राज्य सरकार की कृषि नीतियों की सफलता को दर्शाता है।

यह पुरस्कार बेंगलुरु, कर्नाटक में गतदिनों आयोजित 13वें नेशनल रिव्यू कॉन्फ्रेंस में दिया गया। उद्यानिकी विभाग की ओर से प्रभारी संयुक्त संचालक श्री नीरज शाहा ने यह पुरस्कार प्राप्त किया।

जायद से कमायें अतिरिक्त आमदनी

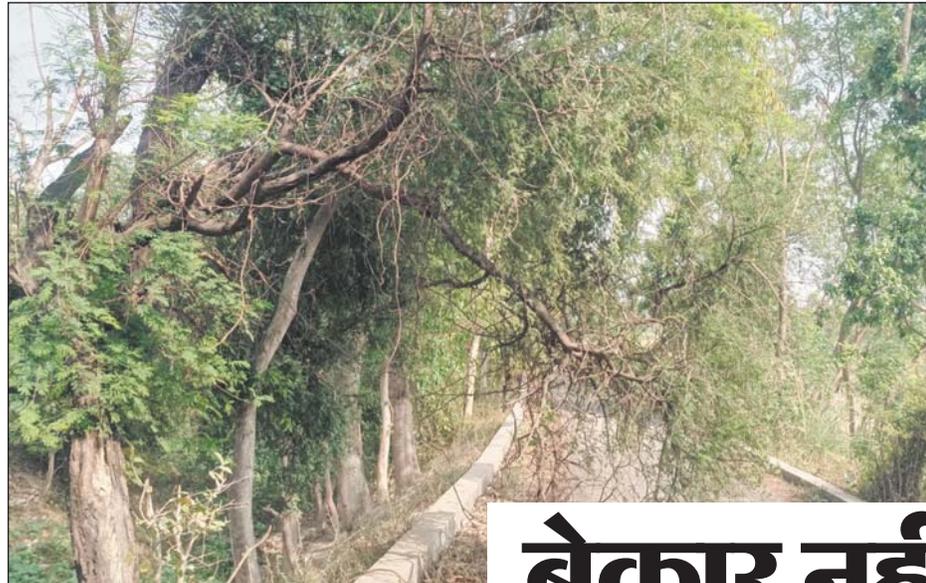
ग्रीष्मकाल में केवल नदी किनारों की रेत पर समाज विशेष के लोग तरबूज-खरबूज, ककड़ी, खीरा तथा अन्य कद्दूवर्गीय फसल लगाकर अपनी आमदनी बढ़ाते थे। आज की स्थिति में जायद का महत्व बहुत बढ़ गया है। सवा अरब से ज्यादा की जनसंख्या वाले देश को अब और अब की जरूरत है, जायद में वैसे तो फसलें



सीमित ही होती हैं पर जो भी होती हैं नगदी कहलाती हैं। कद्दूवर्गीय फसलों के अलावा मूंग, उड़द, सूर्यमुखी, तिल, लोबिया, ग्वारफली, मूंगफली, मक्का जैसी फसलें भी सरलता तथा सफलता से पैदा की जा सकती हैं। आज की आवश्यकता है कि नदी किनारों पर उपलब्ध लाखों हेक्टर भूमि जहां पास ही पानी उपलब्ध है में जायद फसलों का विस्तार किया जाये ताकि अधिक पैसा मिल सके। कद्दूवर्गीय

फसलों के उन्नत बीज की उपलब्धि तथा उनकी उत्पादन तकनीकी का विस्तार हो तथा नदी किनारों पर अनुसंधान प्रयोग डालकर विकसित तकनीकी का प्रदर्शन किया जाना इस दिशा को गति प्रदान कर सकता है। जायद में चाहे कद्दूवर्गीय फसलें हो या तिलहनी, दलहनी सभी को पलने-पुसने के लिए भरपूर सूर्य प्रकाश उपलब्ध रहता है। यही वजह है कि जायद की मक्का, मूंगफली, मूंग, उड़द सभी की औसत उपज खरीफ की तुलना में अधिक होती है। मौसम शुष्क होने के कारण कीट-रोग की सक्रियता भी खरीफ-रबी की तुलना में सीमित तथा कम होती है और यदि होती भी है कि उन पर नियंत्रण के उपाय भी सरलता से किये जा सकते हैं। छिड़काव, भुरकाव के बाद पानी गिरकर दवा के बह जाने का भी डर नहीं रहता है। देश में दालों (प्रोटीन) जो कि ऊर्जा का मुख्य श्रोत है अकेला खरीफ पैदा नहीं कर सकता है जायद इसका सबसे बड़ा विकल्प बन सकता है। दलहनी फसलों को लगाने से एक तीर से दो शिकार सम्भव होते हैं एक तो अच्छी गुणवत्ता वाली फसल, दूसरा भूमि में नत्रजन की गांठों से नत्रजन का जमाव जो आने वाली खरीफ फसल के लिये उपयोगी होता है। देश में पशुचारों की भी कमी है। जायद में चरी की ज्वार जैसा पौष्टिक चारा सरलता से पशुओं के लिये पैदा किया जा सकता है। उपरोक्त सभी कारणों से जायद को जरूरी समझ कर जहां कहीं भी संसाधन उपलब्ध हैं फसलें अवश्य लगाना चाहिये ताकि आर्थिक गति को गति हम दे पायें।

कुछ दशक पहले कृषि के मुख्य दो मौसम खरीफ और रबी हुआ करते थे। हालत यह थी कि खरीफ मौसम में जबकि खेती का सबसे बहुमूल्य आदान पानी बिल्कुल मुफ्त होता था। देश के अधिकांश हिस्सों के खेत खाली पड़े रहते थे कपास, बाजरा, अरहर, ज्वार, मक्का और धान्य बाहुल्य क्षेत्रों में धान के अलावा काले-काले खेत चारों ओर दिखाई पड़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं होती थी। खरीफ के बाद रबी और रबी के बाद भी तीन-चार माह खेत बेकार पड़े रहते थे। समय का चक्र बदला हमारी जनसंख्या दिन दूनी रात चौगुनी के समान बढ़ी और साथ-साथ हमारे भोजन की जरूरत भी बढ़ी, जोत घटी, आवश्यकता बढ़ी। कहावत है आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है कम रकबे से अधिक उपज 100 प्रतिशत से भी कम फसल सघनता ने जोर पकड़ा और जन्म हुआ जायद का। ग्रीष्मकाल में सूने खेतों में हल चला, बखर चला और तीन-चार माह की छोटी अवधि में उपजाने वाली फसलों का चयन कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किया गया और ग्रीष्म का सूखा हरियाली में परिवर्तित होने लगा। पिछली वर्षा में जो खाद्यान्नों में उत्पादन बढ़ा है उसका श्रेय पूर्ण रूप से जायद को ही जाता है। कृषि के इतिहास में



• डॉ. किशोर पवार

जरा सोचिए, जिस पेड़ को लगाना ना पड़े और वह अपने आप धीरे-धीरे घने जंगल में बदल जाए तो उसे क्या बेकार कहेंगे? देश के अनेक क्षेत्र इस तथाकथित बेकार पेड़ से भरे पड़े हैं और यह स्वनिर्मित जंगल तरह-तरह के जीव-जंतुओं, विशेषकर पक्षियों से गुलजार है। शहरों से लगभग गायब हो चुकी गौरैया का यह सुरक्षित ठिकाना है। आज भी गौरैया के बड़े-बड़े झुंड इन कटीले पेड़ों पर बसेरा करते हैं और अपने आप को शिकारियों से सुरक्षित पाते हैं। मालवा और निमाड़ की कई सड़कों के किनारे दोनों तरफ आज भी बबूल के सैकड़ों पेड़ लगे हुए हैं जो बरसात के मौसम में अपने सुंदर पीले फूलों के साथ राहगीरों को शानदार नजारा प्रस्तुत करते हैं।

कबीर का एक बड़ा ही प्रसिद्ध दोहा है - करें बुराई सुख चहे, कैसे पावे कोय। बोया पेड़ बबूल का, तो आम कहां से होय। देखा जाए तो आज हम सब बबूल ही तो बो रहे हैं। हमारे सारे काम बबूल बोने जैसे ही हैं। पेड़ काट रहे हैं और चाहत यह है कि

हरियाली बनी रहे, वायु-प्रदूषण दूर हो। पहाड़ खोद रहे हैं और उम्मीद करते हैं कि भूस्खलन ना हो, पहाड़ी सड़कों के किनारे झरने बहते रहें। शहर की सड़कों, कॉलोनी की गलियों पर पानी के लिए अपारगम्य पेवर्स लगाकर मिट्टी को सांस नहीं लेने दे रहे हैं। आपने जमीन में पानी जाने के रास्ते ही बंद कर दिए तो भूजल कैसे बढ़ेगा? नलकूपों में पानी कहां से आएगा? यह सब काम बबूल लगाने जैसे ही तो हैं।

इसी संदर्भ में एक और दोहा याद कर लेते हैं, महाकवि रहीम का। यह समाज के ऐसे लोगों के लिए लिखा गया है जो परोपकारी नहीं हैं। रहीम कहते हैं-आप न काहू काम के, डार, पात, फल, फूल। औरन को रोकत फिरे रहिमान पेड़ बबूल।

कुछ लोगों की नजर में बबूल के यह बेकार पेड़ अरावली पर्वत श्रृंखला की एक खास वनस्पति है-

खेजड़ी, खैर और पीलू की तरह। अरावली पर्वत श्रृंखला के उजाड़े जाने की महती देशव्यापी चर्चा के बीच आइए इस कांटेदार बबूल की चर्चा कर लें और देखें कि यह आम आदमी और किसानों के लिए कितना उपयोगी है। सदियों से इसकी छाल और फलियां कपड़ा रंगने के लिए टैनिन उपलब्ध कराती हैं। इससे खाकी रंग के कपड़े भी रंगे जाते हैं। बबूल का गोंद औषधीय महत्व का होने के साथ ही केलीको प्रिंटिंग, डाईंग, कागज के निर्माण, माचिस, स्याही, पेंट और कन्फेशनरी की खड़ी-मीठी गोलियों के निर्माण में उपयोग होता है। इसकी नर्म नाजुक शाखाएं टूथब्रश और मंजन दोनों का कार्य कर मसूड़े की कसावट भी बढ़ाती हैं। इसकी फलियों को आज भी निमाड़ में पशु-खाद्य सामग्री बनाने के लिए

एकत्रित कर बाहर भेजा जाता है। यह एक घरेलू रोजगार का सुलभ साधन है। इसकी लकड़ी सागौन से ज्यादा मजबूत है और बड़े पैमाने पर पट्टे बनाने के काम में आती है। इससे उम्दा किस्म का चारकोल मिलता है। यह लकड़ी बैलगाड़ी के पहिए, हल, बकखर और खेती के कई उपकरण बनाने के काम में आती है। बबूल, जिसे कांटों के नाम पर कोसा जाता है, उसका उपयोग आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों को

नुकसान पहुंचाने वाले पशुओं से बचाने के लिए बागड़ की तरह किया जाता है। पलाश के पत्तों से बने पतल-दोनों को आपस में जोड़ने के लिए बबूल के बड़े-बड़े कांटे सुई और धागा दोनों का काम एक साथ करते हैं। बबूल का पेड़ मटर कुल का है यानि इसकी जड़ों पर जड़ ग्रंथियां पाई जाती हैं जिनमें उपस्थित सहजीवी बैक्टीरिया हवा की नाइट्रोजन को उपयोगी रूप में बदल देते हैं जो यूरिया का काम

करती है। आसपास की मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाकर उसे उपजाऊ बनाती है। गहरी जड़ें मरुस्थल का विस्तार रोकती हैं। राजस्थान, मालवा, हरियाणा - सब जगह जल और वायु के संरक्षण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। राजस्थान, गुजरात और दिल्ली से लगे क्षेत्रों के पर्यावरण का यह एक महत्वपूर्ण पेड़ है।

ट्रीज आफ देहली और जंगल ट्रीज आफ सेंट्रल इंडिया किताबों के लेखक प्रदीप कृष्ण इसके उपयोग गिनाते हुए कहते हैं कि यह भारतीय पेड़ों में बहुत ही खास महत्व का है। इसे खेतों की मेड़ पर लगाया जाता है। बबूल एक मध्यम आकार का कांटेदार पेड़ है जिसका वितान पंखदार होता है, छाल काली। पंखनुमा हरे पत्तों से बरसात में गहरे पीले, छोटी-छोटी गोल गेंद जैसे फूलों से लदा यह पेड़ अपने आपमें एक आकर्षण पैदा करता है। इसकी फलियां नेकलेस की तरह मोतियों वाली होती है जिन्हें कभी ग्रामीण युवतियां पांव में पैजिनियों की तरह और कान में बुंदों की तरह लटकाती थीं।

रंगीन फूल पुंकेसरों के कारण सुगंधित होते हैं। इसकी पतियां ऊंटों, बकरियों और भेड़ों का प्रिय चारा है जो इसके बीजों को बिखरने और दूर-दूर तक फैलाने में मददगार हैं। इसके पीले फूलों पर कई परागणकर्ता, जैसे-मधुमक्खियां और तितलियों का आना-जाना लगा रहता है। यह फूल उन्हें मीठा नेक्टर उपलब्ध कराते हैं जिनसे उनकी आबादी बनी रहती है। इसके पेड़ मिट्टी के कटाव को रोकते हैं और उसकी गुणवत्ता सुधारते हैं। पतियों में नाइट्रोजन 12 से 18 प्रतिशत तक पाई गई है। शुष्क भूमि के लिए फिर से बहाली में मदद करता है। भले ही इस पेड़ को उपेक्षित माना गया हो, पर यह है, बहुत महत्वपूर्ण।

इसका जिक्र बाइबल में भी आया है तो इतने महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पेड़ को बेकार करार देने से पहले जरा सोच लेना चाहिए। उसके बारे में कोई अंतिम राय नहीं बनानी चाहिए। अंत में भविष्य में यही बात होगी कि कांटे पेड़ बबूल का, तो सुख कहां से होय।

(संप्रेस)

बेकार नहीं है बबूल !

कभी, कहीं वृक्षारोपण करना हो तो बबूल का नंबर सबसे अंत में आता है। वजह है, बबूल से जुड़ी उसके नकारा होने की अफवाहें। लेकिन क्या बबूल, सु-बबूल हुए बिना सचमुच एक बेकार का पीधा होता है?



- डॉ.एस.के. सिंह, प्रधानाचार्य
को-ऑपरेटिव रूरल डेवलपमेंट ट्रस्ट
- डॉ. इंदिरा राठौर, नैनो वैज्ञानिक
इफको आंवला, बरेली, उ.प्र.
drksingh@iffco.in

मृदा जीवन का आधार है जिस पर कृषि एवं वातावरण की निर्भरता होती है। मृदा स्वास्थ्य एक ऐसी अवस्था है, जिसमें मिट्टी अपने पर्यावरण के अनुरूप पारिस्थिकी तंत्र के कार्यों को पूरा करती है। अधिक बोलचाल की भाषा में मिट्टी का स्वास्थ्य मिट्टी के सभी घटकों जैसे माइक्रोबायोटा, पौधों और जानवरों की अनुकूल बातचीत से उत्पन्न होता है एक स्वस्थ मृदा निम्न आवश्यक कार्यों को स्थिरता प्रदान करती है।

- जल को एकत्र करने एवं उसके बहाव को नियंत्रित करती है।

- सूक्ष्म जीवों में जैव विविधता एवं उत्पादकता में सहयोग करती है।

- खनिज एवं मृदा जीवाणु, ग्राउंडवाटर के प्रदूषकों को फिल्टर करने का कार्य करता है।

- मृदा जीवाणु कुछ तत्व जैसे फास्फोरस, नाइट्रोजन एवं कार्बन के एकत्रीकरण एवं चक्र में भाग लेते हैं।

- पौधों के वृद्धि को एक आवश्यक माध्यम प्रदान करना एवं मानव द्वारा किए जा रहे निर्माण को सपोर्ट करने का कार्य मृदा द्वारा किया जाता है।

मृदा स्वास्थ्य का निर्धारण इसके भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों के आधार पर किया जाता है। एक स्वस्थ मृदा फसलों के अच्छे वानस्पतिक वृद्धि उपज वृद्धि खाद्य उत्पादन एवं वायु सुरक्षा में सहयोग करती है। स्वस्थ मृदा वातावरण से कार्बन स्थिरिकरण कर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने का कार्य करता है। दुर्भाग्यवश कई कारणों जैसे सघन खेती, वर्षों की कटाई, छरण, प्रदूषण, एवं अनुपयुक्त उर्वरक एवं इसके उपयोग के कारण मृदा का स्वास्थ्य खतरे में है।

एक ताजे अध्ययन में पता चला है कि यूरोपीय यूनियन में लगभग 61.1 प्रतिशत जमीन भूमि छरण से प्रभावित है F.A.O के एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व की लगभग 33.1 प्रतिशत भूमि का छरण हो चुका है एवं सन्

मृदा स्वास्थ्य संवर्धन एवं वैकल्पिक उर्वरक उपयोग

2050 तक लगभग 90.1 प्रतिशत भूमियों के छरण की संभावना है।

आधुनिक खेती मुख्य रूप से उर्वरकों के उपयोग पर निर्भर है जिसके कारण वैश्विक



जनसंख्या का भरण पोषण हो पा रहा है परंतु यदि उर्वरकों के उपयोग पर ठीक तरह से प्रबंध नहीं किया गया तो मृदा की उर्वरता एवं उत्पादकता निश्चित रूप से प्रभावित होगी। जब संश्लेषित उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है तो सूक्ष्म जीवाणु जो मिट्टी को भुरभुरा बनाते हैं

शस्य क्रियाओं के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण

निम्न शस्य क्रियाओं के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण किया जा सकता है।

(अ) मिश्रित खेती

एक ही खेत में कई प्रकार के फसलों को उगाकर मृदा उत्पादकता एवं उर्वरता को बढ़ाया जा सकता है। इससे मृदा का छरण एवं मृदा जनित रोगों की रोकथाम होती है दलहनी फसलों के उगाने से मृदा में नत्रजन का स्थिरीकरण होता है एवं अधिक गहरी जड़ों वाली फसलों से भूमि की उर्वराशक्ति में सुधार होता है।

(ब) कम जुताई एवं सीधी बुआई

बार-बार जुताई करने के कारण भूमि का छरण होता है एवं नमी का तेजी से छरण होता है बिना जुताई किये सीधी बुआई से उपलब्ध अवशेषों को सड़ा कर मिट्टी में मिलाने से भूमि की उर्वराशक्ति में सुधार होता है।

(स) हरी खाद का उपयोग

हरी खाद कृषि में मृदा की उर्वरता बढ़ाने का एक प्राकृतिक और प्रभावी तरीका है। इसमें कुछ विशेष फसलों को खेत में उगाकर उन्हें फूल आने की अवस्था में जुताई द्वारा मिट्टी में मिला दिया जाता है। इससे मिट्टी में जैविक पदार्थ और पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ती है।

एवं पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं, नष्ट हो जाते हैं। इसलिए यह अच्छा है कि जितना आवश्यक हो उतना ही दिया जाए जिसका निर्धारण मिट्टी परीक्षण के आधार पर किया जाना चाहिए। यह गलत अवधारणा है कि मृदा विटामिन रासायनिक उर्वरकों के उपयोग के साथ बढ़ते हैं जबकि इसके विपरीत रासायनिक उर्वरकों एवं पेस्टिसाइड के अत्यधिक प्रयोग से मृदा उर्वरकता घटती है।

सामान्य भाषा में उर्वरक वे पदार्थ हैं जिनको पौधों के उत्पादकता एवं उपज वृद्धि के लिए पौधों के ऊपर सीधे अथवा मिट्टी में मिलाकर उपयोग किया जाता है। उर्वरक मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं 1. कार्बनिक एवं

मृदा स्वास्थ्य संवर्धन एवं वैकल्पिक उर्वरक उपयोग

2. संश्लेषित अथवा रासायनिक।

कार्बनिक खाद या प्राकृतिक खाद को वनस्पति या जीव अवशेषों से प्राप्त किया जाता है जबकि अकार्बनिक अथवा रासायनिक

उर्वरकों को रासायनिक प्रक्रिया के माध्यम से तैयार किया जाता है। कार्बनिक अथवा प्राकृतिक खादों का उपयोग कर मृदा स्वास्थ्य को संरक्षित एवं फसलों से अच्छा एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। रासायनिक अथवा संश्लेषित उर्वरकों की मात्रा को कम कर निम्न वैकल्पिक



स्रोतों का उपयोग कर मृदा उर्वरता को संरक्षित अथवा उसमें सुधार किया जाता है।

गोबर की खाद और कंपोस्ट

गोबर की खाद को जानवरों के गोबर से तैयार किया जाता है जबकि कंपोस्ट को खाद्य पदार्थों के अवशेष एवं अन्य वानस्पतिक अवशेषों से सड़ाकर बनाया जाता है।

मृदा सुधारक

यह एक प्रकार के ऐसे पदार्थ होते हैं जिनको मिट्टी में मिलाने से उसकी भौतिक संरचना एवं पोषकता में सुधार होता है।

जैव उत्प्रेरक

जैव उत्प्रेरक जैविक स्रोतों से तैयार किया गया पदार्थ है जिसको बीज, पौधों अथवा मिट्टी में मिलाया जाता है समुद्री घास से तैयार किया गया जाता है जैव उत्प्रेरक किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है जो किसानों की फसलों को व्यापक पोषण प्रदान करता है।

जैव उर्वरक

जैव उर्वरक को सूक्ष्म जीवाणुओं के माध्यम से तैयार किया जाता है। जो कि मृदा उर्वरता में वृद्धि करते हैं इसका उपयोग कर लंबे समय तक मृदा उर्वरता बनाए रखने में सहायता मिलती है।

बायो-पेस्टिसाइड

मृदा में विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म जीवों की उपस्थिति से कार्बन को एकत्र करने में मदद मिलती है। जब हम विभिन्न प्रकार के कीड़ों एवं बीमारियों से पौधों को बचाने के लिए रासायनिक कीटनाशकों या फफूंदनाशकों का प्रयोग करते हैं तो मिट्टी में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणु नष्ट होने लगते हैं रासायनिक, कीटनाशक अथवा फफूंदनाशकों के स्थान पर जैविक पेस्टिसाइड का उपयोग करके हम मिट्टी में इन सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या को बनाए रख सकते हैं।

स्लोरिलीज फर्टिलाइजरर्स

स्लोरिलीज फर्टिलाइजर मिट्टी में तत्वों को धीरे-धीरे लंबे समय तक उपलब्ध कराता है जिससे सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि के कारण मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है।

नैनो उर्वरक

नैनो उर्वरक आधुनिक युग का उर्वरक है जिसमें नैनो आकार के तत्व होते हैं जिसके कारण इसकी उपयोग क्षमता अधिक होती है इफको द्वारा

विभिन्न प्रकार के नैनो उर्वरक जैसे नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, नैनो जिंक, नैनो कॉपर का निर्माण तरल रूप में किया गया है जो कि पूर्ण रूप से वातावरण के अनुकूल एवं मिट्टी, जल एवं वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करता है।

इस प्रकार वैकल्पिक उर्वरक उपयोग एवं विभिन्न शस्य क्रियाओं के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण किया जा सकता है। कृषकों में जागरूकता लाकर एवं इसे क्रियान्वित कराने वाली संस्थाओं के सक्रिय भागीदारी से वृहत पैमाने पर परिणाम प्राप्त करने के लिये यहाँ कार्य निश्चित रूप से किया जा सकता है।

● राज जैन ● अरुण साह
sas_arun@vikrantuniversity.ac.in

मौसम

यह आमतौर पर गर्मियों (अप्रैल से जून) के मौसम में खिलता है। शिरीष के फूल गर्मियों में खिलने वाले रेशेदार पीले कोमल, फूल होते हैं, जिनमें एंटीऑक्सीडेंट और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं, जो त्वचा के रोगों और घावों में उपयोगी होता है।

शिरीष के फूल और पड़े के बारे में

रूप और समय: यह एक विशाल वृक्ष है जिसके कल छोटे पत्ते होते हैं और गर्मियों (अप्रैल - जून) में पीले, रेशेदार फूल खिलते हैं, कोमल होते हैं।

औषधीय गुण: इनमें एंटी - बैक्टीरियल, एंटी - फंगल और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जिनका उपयोग त्वचा की समस्याओं (दाद, खुजली, घाव) और आंतरिक शुद्धिकरण के लिए होता है।

बोवाई

शिरीष के बीज काफी सख्त होते हैं, इसलिए उन्हें सीधे मिट्टी में बोने पर अंकुरण में बहुत समय लगता है या बीज सड़ जाते हैं। घर पर नर्सरी तैयार करने के लिए आप इस वैज्ञानिक लेकिन सरल विधि का पालन कर सकते हैं-

बीजों का चयन और संग्रहण

समय: मार्च से मई के बीच जब शिरीष की फलियां भूरी होकर सूख जाएं और पेड़ पर खड़खड़ाने लगे, तब उन्हें तोड़ लें।

चयन: फलियों को खोलकर स्वस्थ, बड़े और बिना छेद वाले बीज चुनें। जिन बीजों में बारीक छेद हों, उन्हें हटा दें क्योंकि उनमें घुन लगा हो सकता है।

बीज उपचार

शिरीष के बीजों का बाहरी आवरण बहुत कठोर होता है। इसे 'सुप्त अवस्था' तोड़ने के लिए नीचे दी गई दो में से कोई एक विधि अपनाएं-

गर्म पानी की विधि: पानी को उबालें और उसे आग से उतार लें। जब पानी हल्का ठंडा हो जाए (लगभग 80°C), तो बीजों को उसमें डाल दें और 24 घंटे के लिए छोड़ दें। बीज फूलकर आकार में दोगुने हो जाएंगे।

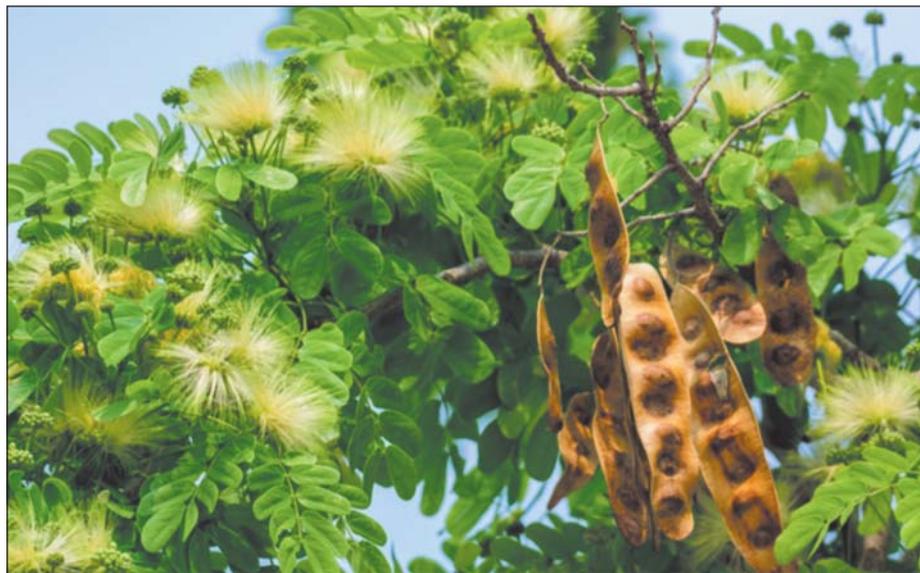
ठंडा पानी विधि: यदि आप गर्म पानी का जोखिम नहीं लेना चाहते, तो बीजों को सामान्य पानी में 48 घंटे तक भिगोकर रखें।

मिट्टी का मिश्रण

पौधों के बेहतर विकास के लिए मिट्टी का सही अनुपात जरूरी है- 50% सामान्य बगीचे की मिट्टी, 30% गोबर की सड़ी हुई खाद या वर्मीकम्पोस्ट, 20% रेत (बालू) इन सबको मिलाकर छान लें ताकि कंकड़ पत्थर निकल जाएं।

बुवाई की विधि

पॉलीथिन बैग: नर्सरी के लिए काले रंग के छोटे पॉलीथिन बैग (5x8 इंच) का उपयोग करें। नीचे



शिरीष के फूल : पाउडर पफ

2-3 छोटे छेद जरूर करें।

गहराई: हर बैग में 1 से 1.5 सेंटीमीटर की गहराई पर 2 बीज बोएं।

दूरी: यदि आप क्यारी में बो रहे हैं, तो बीजों के बीच 10 सेमी की दूरी रखें।

देखभाल और अंकुरण

पानी: बुवाई के तुरंत बाद फव्वारे से पानी दें। मिट्टी में हमेशा नमी रहें, लेकिन कीचड़ नहीं।

अंकुरण समय: बीज 7 से 15 दिनों के भीतर अंकुरित हो जाते हैं।

धूप: शुरुआत के 15 दिनों तक पौधों को हल्की छाया में रखें, उसके बाद उन्हें ऐसी जगह रखें जहाँ 4-5 घंटे की धूप मिले।

खेत में रोपाई

जब पौधे की ऊंचाई 1.5 से 2 फिट हो जाए (आमतौर पर 3-4 महीने में), तब वे खेत में लगाने के लिए तैयार होते हैं।

रोपाई से पहले पॉलीथिन को सावधानी से काटें ताकि जड़ों के आसपास की मिट्टी न टूटे।

एक खास प्रो-टिप

शिरीष के छोटे पौधों पर कभी-कभी 'लीफ माइनर' (पत्तियों पर सफेद धारियां बनाने वाले कीड़े) का हमला होता है। इससे बचने के लिए घर पर बना नीम का तेल या नीम का काढ़ा हर 15 दिन में स्प्रे करें।

शिरीष के फूल के लिए मिट्टी का चयन

के स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छी मानी जाती है।

छायादार और मिट्टी का संरक्षण

शिरीष का फैलाव बहुत अच्छा होता है, इसलिए यह खेतों की मेड़ों पर लगाने के लिए बेहतरीन है।

छाया: यह चाय और कॉफी के बागानों में छाया देने के काम आता है।

मिट्टी का कटाव: इसकी जड़ें मिट्टी को मजबूती से पकड़ती हैं, जिससे भारी बारिश में भी उपजाऊ मिट्टी बहती नहीं है।



शिरीष एक बहुत ही सहनशील पेड़ है, जो लगभग हर तरह की मिट्टी में जीवित रह सकता है। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि यह तेजी से और

शिरीष का फूल एक बहुत उपयोगी पेड़ है इसका वैज्ञानिक नाम Albizia lebbek है एवं यह Fabaceae परिवार से संबंधित है। और शिरीष के फूल को अन्य नाम से भी जानते है जैसे कि सिरिस, लेबेक ट्री, ईस्ट इंडियन वॉलनट आदि साथ ही इसके फूल हल्के हरे - सफेद रंग के गुच्छों में आते हैं और बहुत सुगंधित होते हैं, जिनमें पंखड़ियों की जगह रेशे होते हैं।

अच्छे से बढ़े, तो मिट्टी के बारे में ये बातें ध्यान रखें-

मिट्टी का प्रकार: शिरीष के लिए दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है। हालांकि, यह रेतीली मिट्टी और हल्की पथरीली जमीन पर भी उग सकता है।

जल निकासी: मिट्टी ऐसी होनी चाहिए जिसमें पानी जमा न हो। शिरीष के पेड़ को जलभराव पसंद नहीं है। अगर जड़ के पास पानी रुका रहेगा, तो इसकी जड़ें सड़ सकती हैं। इसलिए ढलान वाली या ऐसी जगह चुनें जहाँ से पानी निकल जाए।

मिट्टी का पीएच मान: यह 5.0 से 8.5 पीएच मान वाली मिट्टी में आराम से बढ़ सकता है।

बंजर जमीन के लिए भी उपयुक्त: अगर आपके खेत का कोई हिस्सा कम उपजाऊ या बंजर है, तो वहाँ भी आप शिरीष लगा सकते हैं। यह मिट्टी की गुणवत्ता को सुधारने में मदद करता है क्योंकि इसकी पत्तियां खाद का काम करती हैं।

लगाने के लिए कुछ आसान टिप्स

मिट्टी तैयार करना: गड्ढा खोदते समय उसमें थोड़ी सी गोबर की खाद मिला दें, जिससे शुरुआती विकास तेजी से हो।

गहराई: चूंकि इसकी जड़ें काफी गहरी और फैलने वाली होती हैं, इसलिए इसे ऐसी जगह लगाएं जहाँ जमीन के नीचे पत्थर की परत न हो।

क्या आप अपने खेत की मिट्टी की जांच के हिसाब से इसे लगाने की सलाह चाहते हैं?

शिरीष लगाने की सही तकनीक

खेत की मेड़ों पर शिरीष लगाने के लिए निम्नलिखित चरणों का पालन करना चाहिए:

गड्ढों की तैयारी: मानसून शुरू होने से पहले 60x60x60 सेमी आकार के गड्ढे खोदें। दो पेड़ों के बीच कम से कम 5 से 6 मीटर की दूरी रखें ताकि उनकी छतरी एक-दूसरे में न उलझे।

मिट्टी का उपचार: गड्ढों की मिट्टी में नीम की खली और गोबर की खाद मिलाएं। इससे शुरुआती दौर में दीमक और कीटों से सुरक्षा मिलती है।

रोपण का समय: जुलाई-अगस्त (मानसून का समय) सबसे उपयुक्त है। नर्सरी से लाए गए 6-9 महीने पुराने पौधों को लगाएं।

छंटाई: शुरुआती 2-3 वर्षों तक पेड़ की निचली शाखाओं की छंटाई करते रहें। इससे पेड़ सीधा और ऊंचा जाएगा, जिससे खेत में छाया कम पड़ेगी और फसलों को पर्याप्त धूप मिलेगी।

शिरीष के साथ उगाई जाने वाली फसलें

शिरीष की जड़ें गहरी होती हैं और यह मिट्टी में नाइट्रोजन छोड़ता है, इसलिए इसके साथ ऐसी फसलें उगाई जा सकती हैं जिनमें नाइट्रोजन की अधिक आवश्यकता होती है।

छाया सहन करने वाली फसलें

चूंकि बड़े होने पर शिरीष की छाया काफी फैलती है, इसके नीचे निम्नलिखित फसलें बेहतर परिणाम देती हैं-

हल्दी और अदरक: इन फसलों को हल्की छाया की आवश्यकता होती है। शिरीष के नीचे की नमी इनके कंदों के विकास में मदद करती है।

अरबी: छायादार स्थानों पर पैदावार देती है।

अनाज और दलहन

अरहर: अरहर और शिरीष दोनों एक ही परिवार के हैं। इनके बीच का तालमेल मिट्टी की उर्वरता को दोगुना कर देता है।

मक्का: शिरीष द्वारा स्थिर की गई नाइट्रोजन का लाभ मक्का की फसल को मिलता है, जिससे पैदावार बढ़ती है।

मूंग और उड़द: इन लघु अवधि की फसलों को पेड़ की कतारों के बीच खाली जगह में आसानी से उगाया जा सकता है।

चारा फसलें

नेपियर घास या गिनी घास: अगर आप पशुपालन करते हैं, तो पेड़ों के बीच की जगह में इन घासों को लगा सकते हैं। शिरीष की गिरती पत्तियां इन घासों के लिए प्राकृतिक खाद का काम करती हैं।

होता है। जिस क्षेत्र में शिरीष के पेड़ अधिक होते हैं, वहाँ मधुमक्खी पालन बहुत सफल होता है क्योंकि मधुमक्खियाँ इसके फूलों से शहद इकट्ठा करना पसंद करती हैं। इससे न केवल शहद का उत्पादन बढ़ता है, बल्कि आसपास की फसलों में परागण की प्रक्रिया भी तेज होती है, जिससे फसलों की पैदावार में सुधार होता है।

ईंधन और लकड़ी की प्राप्ति

किसान अपनी घरेलू ऊर्जा जरूरतों के लिए शिरीष की सूखी टहनियों का उपयोग ईंधन के रूप में करते हैं। इसकी लकड़ी मजबूत होती है, जिसका उपयोग कृषि उपकरणों (जैसे हल, बैलगाड़ी के पहिये) और ग्रामीण निर्माण कार्यों में किया जाता है।

किसानों का मित्र और बहुउपयोगी वृक्ष

शिरीष एक मध्यम से बड़े आकार का पेड़ है जिसे भारतीय कृषि और वानिकी में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसे 'सफेद सिरिस' या 'काला सिरिस' के नाम से भी जाना जाता है।

मिट्टी की उर्वरता बढ़ाना: शिरीष एक फलीदार पौधा है। इसकी जड़ों में विशेष ग्रंथियां होती हैं जो हवा से नाइट्रोजन लेकर मिट्टी में मिला देती हैं। इससे मिट्टी उपजाऊ बनती है और आसपास की फसलों को प्राकृतिक खाद मिल जाती है।

पशुओं के लिए पौष्टिक चारा: कृषि क्षेत्र में शिरीष की पत्तियों का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में किया जाता है। इसकी पत्तियों में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है, जो गाय, भैंस और बकरियों

लकड़ी का उपयोग

शिरीष की लकड़ी मजबूत और टिकाऊ होती है। किसान इसका उपयोग हल, बैलगाड़ी के पहिए और अन्य कृषि उपकरण बनाने में करते हैं। इसके अलावा, इसका उपयोग फर्नीचर और ईंधन (जलाऊ लकड़ी) के लिए भी किया जाता है।

मधुमक्खी पालन

शिरीष के फूलों में भरपूर मात्रा में मकरंद



- डॉ. माधुरी स. लहामगे
- ऋषिकेश कंटाले
- निथी डेवरी

बटेर को लावा तितर ऐसे विविध नाम से जाना जाता है। बटेर पक्षी अपनी स्वादिष्ट मांस, अंडे और अपने औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। कुछ वर्षों में बटेर की जापानी नस्लों को विकसित किया गया है। इसलिए बटेर पालन आसान हो गया है। बटेर पालन आजकल के परिवेश में ग्रामीण व्यवस्था में श्रेष्ठतम व्यावसायिक पालन की श्रेणी में आता है। कुक्कुट पालकों को जापानी बटेर की फार्मिंग के लिये एक लाइसेंस की आवश्यकता होती है। लाइसेंस चार प्रकार के होते हैं। बटेर बिक्री के लिए, बटेर पालने के लिए, मांस बिक्री के लिए, बटेर उत्पादन के लिए। जो आसानी से पशुधन अधिकारी से मिल सकता है।

आवास प्रबंधन

बटेर चूजों का पालन दो तरीके से किया जा सकता है, डीप लीटर पद्धति और बैटरी ब्रूडर इसके लिए बैटरी ब्रूडर काफी उपयुक्त होता है।

डीप लीटर पद्धति

इस पद्धति में कम जगह लगती है। दो सप्ताह तक डीप लीटर विधि में 200 से 250 वर्ग से.मी. प्रति चूजा जगह होनी चाहिए। उसके बाद चूजों को बैटरी ब्रूडर में रखा जाता है।

बैटरी ब्रूडर पद्धति

- पहले दो सप्ताह तक 3×2.5×1.5 फीट जगह

बटेर पालन के लाभ

कुक्कुट पालन में नये विकल्प के तौर पर कम खर्च में अधिक आय पाने का जरिया बना है बटेर पालन। व्यवसाय में आमदनी के लिये मुर्गी की तुलना में जापानी बटेर की विशेषतः पर ध्यान दें।

- बटेर पालने के लिए कम जगह लगती है।
- कम खर्च में बटेर पालन कर सकते हैं।
- बटेर की प्रजाति प्रति वर्ष तीन से चार पीढ़ी को जन्म दे सकती है।
- मादा बटेर अनुकूल वातावरण में लम्बे समय तक अंडे देती है।
- व्यावसायिक बटेर पालन में टीकाकरण की आवश्यकता नहीं होती है तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होने के कारण इसमें बीमारियाँ न के बराबर होती हैं।
- जापानी बटेर के अंडों की पौष्टिकता मुर्गी के अंडों से कम नहीं होती है।
- बटेर का अंडा मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयुक्त है।
- बटेर का मांस बहुत स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। उनके मांस में वसा बहुत कम होता है। इसलिए बटेर का मांस रक्तचाप के रोगियों के लिए बहुत उपयुक्त है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अतिरिक्त आय का बड़ा स्रोत बटेर पालन

आज भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे स्तर पर मुर्गी पालन से अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। साथ ही मुर्गी पालन आज दुनिया में आय प्राप्ति का एक बड़ा व्यवसाय बन चुका है। इसके साथ ही भारत में बटेर की खेती अच्छी आय और रोजगार के अवसर का एक बड़ा स्रोत हो सकती है। बटेर सबसे छोटे आकार के पोल्ट्री पक्षियों की एक प्रजाति है जिसकी पालन-पोषण प्रणाली बहुत आसान और सरल है। जंगली बटेरों को घरेलू पक्षियों के रूप में पालने के तरीकों का पता जापानी वैज्ञानिकों ने पहले लगाया। बटेर की खेती जापान और दुनिया भर में काफी फैल गई है। अब दुनिया भर में बटेर की खेती का व्यवसाय लोग मांस और अंडे दोनों के व्यावसायिक उत्पादन के लिए करते हैं। यह व्यवसाय अन्य पोल्ट्री व्यवसाय की तुलना में अधिक लाभदायक है। जापानी बटेर पालन में भारत का मांस उत्पादन में पाँचवाँ तथा अण्डा उत्पादन में सातवाँ स्थान है। सभी प्रकार की वायु और पर्यावरण के साथ बटेर खुद को ढाल सकते हैं और बटेरों के लिए भारतीय जलवायु बहुत उपयुक्त है। आजकल भारतवर्ष में ज्यादा लोग जापानी बटेर का व्यावसायिक पालन कर रहे हैं। बटेर के मांस और अंडे अन्य पोल्ट्री अंडे की तुलना में बहुत स्वादिष्ट और पौष्टिक होते हैं क्योंकि इसमें तुलनात्मक रूप से प्रोटीन, फास्फोरस, लोहा, विटामिन ए बी 1 और बी 2 अधिक होता है।

में लगभग 100 बटेर रख सकते और तीन से छह सप्ताह तक 4×2.5×1.5 फीट जगह में लगभग 50 बटेर रखे जा सकते हैं।

- 6 से 7 सप्ताह की आयु वाले बटेर से अंडे मिलने लगते हैं। प्रजनन के लिए तीन मादा पर एक नर की व्यवस्था करें।
- एक मुर्गी के लिए निर्धारित स्थान पर 8-10 बटेर रख सकते हैं। छोटे आकार के होने के कारण इनका पालन आसानी से किया जा सकता है। इसके साथ ही इनपे दाने की खपत कम होती है।
- बटेर पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए उनके विविध नस्लों के बारे में जानना जरूरी है।
- केंद्रीय अनुसंधान संस्थान के द्वारा जो नस्लें विकसित की गई हैं।
- **ब्रॉयलर बटेर की नस्लें** : कैरी उत्तम (सफेद छाती वाले) कैरी श्वेता (सफेद पंख वाले) और कैरी पर्ल (सफेद अंडे देने वाले)।
- **अंडा देने वाली बटेर की नस्लें** : इंग्लिश सफेद ब्रिटिश रेंज और मांचुरियन गोल्ड।
- **आहार प्रबंधन**
बटेर आहार के लिए कोई खास व्यवस्था नहीं करनी पड़ती है। बटेर की सही शारीरिक बढ़वार के

लिए संतुलित आहार की जरूरत होती है।

बटेर की शारीरिक बढ़वार 10-12 सप्ताह कि उम्र में पूरी हो जाती है। शुरु के 3 सप्ताह में अधिक बढ़वार होती है।

एक वयस्क बटेर को प्रतिदिन 14 कि.ग्रा. आहार की आवश्यकता होती है।

अंडा उत्पादन करने वाली एक बटेर को एक दिन में 18 से 20 ग्राम दाना जब कि मांस उत्पादन करने वाली एक बटेर को 25 से 28 ग्राम दाना लगता है।

पाँच सप्ताह की उम्र तक एक किलो ग्राम मांस पैदा करने के लिये 2.5 किलो ग्राम दाने की आवश्यकता पड़ती है।

चूजों की देखभाल



बटेर के बच्चे का वजन लगभग 7 ग्राम होता है। इसलिए उसकी देखभाल काफी सावधानीपूर्वक करनी पड़ती है। शुरुआती दिनों में बटेर के चूजों पर विशेष ध्यान देना होता है। क्योंकि पहले सप्ताह में चूजों का मृत्यु दर अधिक देखा जाता है।

चूजों का पालन जमीन पर डीप लीटर पद्धति या बैटरी ब्रूडर में किया जाता है।

चूजों को 3-4 सप्ताह के बाद तापक्रम की आवश्यकता नहीं रहती है। इसलिए उन्हें ग्रीवर घर में रख दें।

चूजों को कैनिबालिस्म नाम के रोग से बचाने के लिए चार सप्ताह की उम्र में चूजों के ऊपर के चोच को थोड़ा काट दें।

बटेर मादा 75 प्रतिशत अंडे शाम के समय (दोपहर 3-6) देती है।

रोज की सफाई एवं रखरखाव स्वच्छ पानी की व्यवस्था और उचित वेंटिलेशन यह पर्यावरण को रोग मुक्त रखने में मदद करता है।

बटेर में होने वाली प्रमुख बिमारियों में अलसरेटिव इंटेस्टाइटिस यह जीवाणु जनित बीमारी है। इसमें इंटेस्टाइन में अल्सर हो जाते हैं। इसके रोकथाम के लिए लीटर की सफाई पर ध्यान दें कॉक्सीडियोसिस यह बीमारी खराब रखरखाव के कारण फैलती है और हिस्टोमोनियसिस इसके बचाव के लिए समय-समय पे डीवर्मिंग करवायें।

बटेर की बिक्री

बटेर को बाजार में बेचने की उम्र लगभग पांच सप्ताह की होती है।

सावधानियां

- चूजे मान्यता प्राप्त हैचरी से ही लें।
- चूजों को संतुलित आहार दें।
- दाना-पानी वाले बरतनों को दिन में कम से कम एक बार साफकरें।
- बीमार और कमजोर पक्षियों को अलग रखें।

बटेर की सही शारीरिक बढ़वार के लिए संतुलित आहार की जरूरत होती है।

रोग प्रबंधन

मुर्गियों की तुलना में बटेर में रोग कम होते हैं।

अंडों की देखभाल

- एक अंडे का वजन लगभग 7-15 ग्राम होता है।
- अंडे काले डॉट्स के साथ सफेद होते हैं।
- बटेर के अंडे का स्पुटन (हेंचिंग) कृत्रिम तरीके से इनक्यूबेटर में आसानी से किया जा सकता है।
- अंडों को सेने के लिए तापमान और नमी पर विशेष रूप से ध्यान देना होता है।
- अंडा सेने के समय 0-14 दिनों तक तापमान 99.50 फारेनहाइट और नमी 87 प्रतिशत होनी चाहिए। इसके बाद 15-17 दिनों तक तापमान 98.50 फारेनहाइट एवम नमी 90 प्रतिशत हो।
- 14 दिनों तक एक निश्चित समय पर अंडों का उलटना-पलटना जरूरी होता है। उसके बाद अंडों को इनक्यूबेटर से हेंचिंग मशीन में रख दिया जाता है। तब 18वे दिन से अंडों से चूजे निकलना शुरु होते हैं।
- मुर्गी अंडे की तुलना में बटेर के अंडे में 2.47 कम वसा होता है।
- 5 सप्ताह के आयु के बाद बटेर के चूजों को जमीन पर या पिंजड़ों में रखा जा सकता है।
- जमीन पर लीटर को फैलाकर रखा जा सकता है। उसकी मोटाई 10 से.मी. तक पर्याप्त है।
- 8 से 12 बटेर को 2.5 से 3 वर्ग फीट स्थान में रखा जा सकता है।



समस्या-समाधान

समस्या- खीरा या कद्दूवर्गीय फसलों में सफेद इल्ली के कारण फल सड़ जाते हैं, उपाय बतायें, कीटनाशक नहीं डालना चाहता हूँ।

-लक्ष्मण पाटीदार



समाधान- खीरा तथा अन्य कद्दूवर्गीय फसलों में फलों की मक्खी का प्रकोप होता है, जिसके कारण फल अन्त में सड़ जाते हैं। मादा मक्खी फलों की त्वचा के नीचे अपने अंडे देती है। उस स्थान पर गोंद जैसा पदार्थ उन्हें ढंक लेता है, इसको हटाने पर आपको सफेद लम्बे 5-6 अंडे दिखाई दे जायेंगे। इनसे इल्ली निकलती है जो फल को अन्दर ही अन्दर नष्ट करती है और फल सड़कर अन्दर काले पड़ जाते हैं। इल्ली विकसित होने पर बाहर निकल कर भूमि में शंखी में परिवर्तित हो जाती है।

● बिना कीटनाशक के फलों की मक्खी के नियंत्रण के लिए नियमित निराई गुड़ाई करते रहें जिससे शंखी मक्खी में विकसित न हो पाये।

● ग्रसित फलों को तोड़कर गहरे गड्ढे में गाड़ दें ताकि उससे विकसित मक्खी न निकल पाये।

● खेत में श्यामा तुलसी का प्रपंच लगायें इसके लिए एक चौड़ी कांच की बोतल में कीप लगा लें तथा बोतल में श्यामा तुलसी की कुछ पत्तियों को मसल कर रख दें। इससे फलों की मक्खी उसके प्रति आकर्षित होगी और बोतल में एकत्र हो जाएगी। कीप का छेद छोटा होने के कारण वे बाहर नहीं आ पायेगी।

● फलों की मक्खी के लिए मिथाईल ड्यूसीनाल नामक पदार्थ भी विकसित किया गया है जो आम की मक्खी के लिए उपयुक्त पाया गया है जो नर मक्खी को आकर्षित करता है, प्रयोग भी किया जा सकता है।

समस्या- बैंगन की में जड़ों में गांठें पड़ गयी थीं। आगे क्या- क्या सावधानी रखें?

- हीसिलाल रैकवार

समाधान- ● बैंगन व उसकी जाति की अन्य

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें। एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें। वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.) फोन- 0755-4248100,2554864

फसलों टमाटर, मिर्च आदि में सूत्रकृमि (निमोटोड) के कारण जड़ों में गांठें पड़ जाती हैं।

● यह सूत्रकृमि मेलोडोगायनी स्पीसिज कहलाता है। इसका प्रकोप होने पर फसल की जड़ें पोषक तत्व अवशोषित नहीं कर पाती हैं और पौधों की पत्तियों पर यह लक्षण दिखते हैं। पत्तियां पीला पड़ कर सिकुड़ने लगती हैं व पौधे बौने रह जाते हैं।

● इस कारण फूल व फलों की संख्या में बहुत कमी आ जाती है।

● आगामी फसल के लिए आप उस खेत में बैंगन, टमाटर, मिर्च की फसल 2-3 वर्ष तक न लगायें, कोई अन्य फसल लें।

● बैंगन जिस खेत में ले रहे हों तो 1-2 कतार के बाद गेंदा लगा दें इससे सूत्रकृमि नहीं पनप पायेगा।

● रोगग्रस्त खेतों की गर्मी में गहरी जुताई अवश्य कर लें।

● पौधों की नर्सरी ग्रसित खेत में न लगायें।

● नर्सरी में बीज बोने के पूर्व 10 ग्राम कार्बोफ्यूरान प्रति वर्ग मीटर की दर से डालें। रोपाई के पूर्व पौधों को थायोजानिक दवा के 500 पीपीएम (5 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी) के घोल में 15 मिनट तक डुबाकर रखें।

● कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत के दानों को रोपा पूर्व 10 किलो प्रति एकड़ के मान से मिट्टी में मिला दें।

● इन उपायों से सूत्रकृमि को नियंत्रित करने में सहायता मिलेगी।

समस्या- अरबी की फसल बीमारी के कारण नष्ट हो जाती है, नियंत्रण के उपाय बतायें।



- काशीराम पटेल

समाधान- ● अरबी की फसल में पिछेती झुलसा का प्रकोप मुख्य रूप से आता है। प्रकोप के आरम्भ में पत्तियों में धब्बे दिखते हैं जो बाद में फैल जाते हैं और अन्त में पूरी पत्ती झुलस कर नष्ट हो जाती है। अधिक नमी अवस्था में यह ज्यादा फैलता है।

● बुआई के लिए रोगग्रसित खेत के बीज का उपयोग करें।

● बीज को वीटावेक्स 2 ग्राम प्रति किलो बीज के मान से बुआई पूर्व उपचारित कर लें।

● फसल में संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें। इस फसल को पोटाश की भी आवश्यकता होती है। इसलिए प्रति एकड़ 40 किलो पोटाश बुआई के पूर्व भी अवश्य दें। यह पौधों में कीटों तथा रोगों के प्रति प्रतिरोधी क्षमता भी उत्पन्न करता है।

● खड़ी फसल में रोग के धब्बे दिखते ही ताम्रयुक्त फफूंदी नाशक 1.25 किलो ग्राम या मेन्कोजेब के 800 ग्राम का प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें। छिड़काव के लिए घोल की मात्रा

प्राकृतिक खेती - अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

जैविक उपज की मार्केटिंग/बिक्री क्या भारतीय बाजार में जैविक उपज की मांग है?

हाँ, ग्राहकों में बढ़ती हेल्थ अवेयरनेस के कारण जैविक उपज की मांग बढ़ रही है।

मैं अपने जैविक उत्पाद की लोकल और क्षेत्रीय स्तर पर मार्केटिंग और बिक्री कैसे कर सकता हूँ?

जैविक उत्पाद में दिलचस्पी रखने वाले ग्राहकों तक पहुँचने के लिए स्थानीय किसानों के मार्केट, ऑर्गेनिक फूड स्टोर, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और डायरेक्ट बिक्री के बारे में जानें।

क्या जैविक उत्पाद के लिए सर्टिफिकेशन प्रोसेस हैं, और क्या मुझे सर्टिफाइड होने के बारे में सोचना चाहिए?

ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन ऑप्शनल है, लेकिन इससे मार्केट के मौके बढ़ सकते हैं। NPOP और PGS-इंडिया जैसी सर्टिफिकेशन एजेंसियां ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन देती हैं।

भारतीय बाजार में जैविक फसलों के लिए संभावित मूल्य प्रीमियम क्या हैं?

जैविक फसलों की कीमतें अक्सर ज्यादा होती हैं, लेकिन प्रीमियम मूल्य फसल के टाइप, लोकेशन और मार्केट की मांग जैसे बिन्दुओं के आधार पर अलग-अलग होते हैं।

चुनौतियाँ और चिंताएँ

प्राकृतिक खेती करने वाले भारतीय किसानों को आमतौर पर किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

चुनौतियों में कीट और रोग प्रबंधन, जानकारी की कमी, बदलाव का विरोध और मार्केटिंग की मुश्किलें शामिल हो सकती हैं।

प्राकृतिक खेती में फसल की पैदावार और आमदनी में होने वाले उतार-चढ़ाव से मैं कैसे निपटूँ?

फसलों में अलग-अलग तरह की फसलें उगाएँ, इमरजेंसी फंड बनाएँ, और उतार-चढ़ाव को मैनेज करने के अनुभव और तरीके साझा करने के लिए किसान समूहों में हिस्सा लें।

क्या प्राकृतिक खेती के तरीकों से कोई जोखिम जुड़े हैं?

रिस्क में कीट फैलने या मौसम की वजह से फसल का नुकसान शामिल है, लेकिन इन्हें अक्सर योजना प्लानिंग से कम किया जा सकता है।

मैं प्राकृतिक खेती को लेकर पारंपरिक किसानों या परिवार के सदस्यों के विरोध से कैसे निपट सकता हूँ?

बातचीत करें, सफलता की कहानियाँ शेयर करें, और धीरे-धीरे सपोर्ट पाने के लिए प्राकृतिक खेती के फायदे दिखाएँ।

कृषक जगत

बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संरक्षण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95

कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर निशान लगाएं

016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050

नाम _____

ग्राम _____ पोस्ट _____ तह. _____

जिला _____ फोन/मोबा. _____

कुल राशि _____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या _____

संलग्न ड्राफ्ट नं. _____ मनी ऑर्डर रसीद क्र. _____ वी.पी. भेजें

कृपया ड्राफ्ट या मनीऑर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम

14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011

फोन : 0755-4248100, 2554864, मो. : 9826255861, Email-info@krishakjagat.org

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियाँ खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

स्वास्थ्य

हमारे जीवन में सब्जियों का विशेष महत्व है सब्जियों को यदि हम पकाने की अपेक्षा यदि सलाद के रूप में कच्चा खाये तो वे अधिक पौष्टिक व गुणकारी होती हैं व शरीर में विभिन्न तत्वों की कमी को भी पूरा करती हैं वे सब्जियाँ हमारे लिए विशेष महत्व रखती हैं जिन्हें हम ताजा व कच्चा खा सकते हैं। हरी ताजी सब्जियाँ खाना हमारे स्वास्थ्य के लिए विशेष हितकारी होता है। इनको खाने से शारीरिक शक्ति बढ़ती है व मोटापा घटता है। ताजी सब्जियों में पोषक तत्व अधिक व कैलोरी कम होती है। सब्जियों को कच्चा खाने से व निरंतर इसका सेवन करने से खाना जल्दी हजम (पचता) होता है। भूख बढ़ती है रक्त शुद्ध होता है और शरीर की त्वचा में निखार आता है। हमारे भोजन में सलाद का विशेष महत्व है सलाद में हम उन कच्ची सब्जियों को ले सकते हैं तो हम कच्ची भी खा सकते हैं। सलाद का भोजन में मुख्य स्थान होने का कारण इनमें सभी विटामिनो, पौष्टिक तत्वों, लौह, फस्फोरस गंधक वसा कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन का होना मूली, गाजर, टमाटर, बंदगोभी, प्याज, हरी मिर्च, नींबू, अदरक को कच्चा खाने पर मूल रूप से अधिक से अधिक विटामिन प्राप्त होता है। जो शरीर को स्वस्थ बनाये रखने में सहायक होते हैं। मूली से विटामिन बी, सी, गाजर से



विटामिन ए. सी. लोहा तथा शलजम से विटामिन बी. सी. की प्राप्ति होती है। प्याज से विटामिन बी. सी. गंधक व फस्फोरस पर्याप्त मात्रा में मिलता है। विभिन्न सब्जियों से हमें

जो पौष्टिक तत्व व विटामिन मिलते हैं व आगे दिए गए हैं:- मौसम के अनुसार विभिन्न प्रकार की सब्जियों का सलाद के रूप में सेवन किया जाना चाहिए। इस सब्जियों को किसी भी समय ताजा खाया जा सकता है। खाना खाने से पूर्व अथवा खाना खाने के बाद या खाने के साथ विभिन्न आकारों में काटकर नींबू, नमक व सिरका मिलाकर बनाया गया स्वादिष्ट सलाद खाना अतिगुणकारी होता है। निम्नलिखित सब्जियों को सलाद के रूप में खाना उपयोगी रहता है। खीरा, ककड़ी,

टमाटर फूलगोभी कंदीय सब्जियाँ जैसे गाजर, मूली, शलजम, चुकंदर, प्याज एवं हरे पत्ते वाली सब्जियाँ जैसे सलाद, हरा धनिया, चने के पत्ते, मूली के पत्ते, पालक, बंदगोभी पोदीना और सोया इत्यादि। आजकल विदेशी सब्जियाँ जैसे लालगोभी, हरीगोभी ऐस्परेगस पार्सल इत्यादि को भी सलाद के रूप में बड़े होटलों में उपयोग में लाया जाता है। इन सभी सब्जियों को प्रतिदिन सलाद में खाना सेहत के लिए लाभकारी रहता है। सलाद बनाते समय कुछ विशेष बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए जैसे:-

1. सलाद बनाने के लिए ताजी सब्जियों का चुनाव करें।
2. सलाद बनने से पहले सब्जियों व हाथों को अच्छी तरह से धो लें।
3. कभी भी सड़ी गली सब्जियों का प्रयोग न करें।
4. बहुत पहले से कटा हुआ सलाद खाने योग्य नहीं होता इसलिए सलाद खाने से कुछ पूर्व की काटे।
5. मूली, गाजर, शलजम, चुकंदर, खीरा, ककड़ी, प्याज गांठ गोभी इत्यादि को छीलने के बाद सलाद के लिए काटें।
6. सलाद काटने के लिए तेज छुरी या चाकू का उपयोग करें।
7. यदि सलाद पर नींबू या नमक डालना हो तो खाने से थोड़ा देर पहले डालें।

सेहत में उपयोगी संतरे का शरबत

संतरा एक स्वास्थ्यवर्धक फल है यह सिर्फ स्वाद की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अच्छा होता है। सर्दियों में संतरे जैसा फल बहुत ही आसानी से उपलब्ध होता है। संतरे में प्रचुर मात्रा में विटामिन सी होता है एक व्यक्ति को जितनी विटामिन सी की आवश्यकता होती है वह एक संतरे को प्रतिदिन खाते रहने से पूरी हो जाती है। संतरे में लोहा और पोटेशियम भी काफी मात्रा में पाया जाता है संतरे के सेवन से शरीर स्वस्थ रहता है चुस्ती-फुर्ती बढ़ती है। संतरे की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विद्यमान फ्राक्टोज, डेक्टोज, खनिज एवं विटामिन शरीर में पहुंचते ही ऊर्जा देना प्रारंभ कर देते हैं। संतरे के सेवन से हृदय तथा मस्तिष्क को नयी शक्ति व ताजगी मिलती है। अन्य खट्टे फलों की तरह संतरा एक शक्तिशाली प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट है। फाइबर तथा पेक्टिन की उपलब्धता के कारण संतरा अधिक वजन के लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। संतरे के अन्य लाभ इस प्रकार हैं:-

उच्च रक्तचाप के मरीज के लिए:- संतरे में मैग्नीशियम तथा पोटेशियम अधिक मात्रा में होते हैं, इसलिए यह उच्च रक्तचाप के मरीजों के लिए अच्छा है।

कोल्ड और फ्लू से बचाव के लिए:- विटामिन सी की अधिक मात्रा होने के कारण संतरे के सेवन से प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत बनती है और कोल्ड और फ्लू जैसे संक्रमण का खतरा कम होता है।

कैंसर का जोखिम कम:- प्रतिदिन संतरे के जूस के सेवन से किसी भी प्रकार के कैंसर की संभावना कम होती है क्योंकि संतरे के जूस में एण्टी ऑक्सिडेंट्स अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।



गठिया के मरीजों के लिए:- गठिया के मरीज भी संतरे का सेवन कर सकते हैं। इससे किसी प्रकार के दर्द से आराम मिलता है तथा वजन भी नियंत्रित रहता है।

घावों के भरने में:- संतरे के जूस में फोलेट पाया जाता है और फोलेट घावों को भरने में और नये सेल्स के निर्माण में मदद करता है।

संतरे का पोषण मान (1 संतरा, वजन

140 ग्राम)

संतरा फल मौसमी होता है इसलिए संतरा फल का लाभ पूरे वर्ष लेने के लिए इसको निम्नलिखित विधि द्वारा संरक्षित किया जा सकता है।

संतरे का स्वदेश

आवश्यक सामग्री:- संतरे का रस 1 लीटर चीनी 1.8 किलोग्राम, पानी 1.2 लीटर, साइट्रिक अम्ल 25-30 ग्राम, पोटेशियम मेटाबाइसल्फाइड 3 ग्राम, संतरे का इत्र 2 चाय चम्मच, संतरे का रंग आवश्यकतानुसार।

बनाने की विधि:-

● ताजे पूरे पके हुए स्वस्थ संतरे लें और ठंडे पानी में अच्छी तरह धोयें।

● संतरे बीच में से आधे काटकर, रस निकालने वाले यंत्र से रस निकालें।

● रस को महीन कपड़े से छान लें।

● रस में चीनी मिला लें और मिश्रण को गर्म कर लें ताकि चीनी घुल जाए।

● रंग व खुशबू मिलाकर, छान लें।

● प्रति किग्रा. स्वदेश में 610 मिग्रा. के एम. एस. (पोटेशियम मेटाबाइसल्फाइड) डालें तथा स्कैश को साफसूखी बोतलों में भर दें।

● उबाली हुई कार्क या ढक्कन से बंद करें।

● बंद बोतल के कार्क वाले सिरे को पिघले मोम में उल्टा करके डुबोयें।

नोट:- खाना खाने से तुरंत पहले या तुरंत बाद में संतरे के जूस का सेवन नहीं करना चाहिए। एसिडिटी के मरीजों को संतरे का जूस कम पीना चाहिए।

आठ पहर क्या हैं, जानिए

दिन-रात मिलाकर 24 घंटे में हिंदू धर्म अनुसार आठ पहर होते हैं। औसतन एक प्रहर तीन घंटे का होता है जिसमें दो मुहूर्त होते हैं। एक पहर तीन घंटे या साढ़े सात घंटे का होता है। एक घंटी 24 मिनट की होती है। दिन के चार और रात के चार मिलाकर कुल आठ पहर। भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग के गाने का समय निश्चित है। प्रत्येक राग प्रहर अनुसार निर्मित है।

आठ पहर के नाम- दिन के चार पहर- पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न और सायंकाल। रात के चार पहर- प्रदोष, निशिय, त्रियामा एवं उषा। प्रत्येक पहर में गायन, पूजन, जप और प्रार्थना का महत्व है।

आठ पहर - एक पहर तीन घंटे का होता है। सूर्योदय के समय दिन का पहला पहर प्रारंभ होता है जिसे पूर्वाह्न कहा जाता है। दिन का दूसरा पहर जब सूरज सिर पर आ जाता है तब तक रहता है जिसे मध्याह्न कहते हैं।

इसके बाद अपराह्न (दोपहर बाद) का समय शुरू होता है, जो लगभग लगभग 4 बजे तक चलता है। 4 बजे बाद दिन अस्त तक सायंकाल चलता है। फिर क्रमशः प्रदोष, निशिय एवं उषा काल।

अष्टयाम- वैष्णव मन्दिरों में आठ पहर की सेवा-पूजा का विधान अष्टयाम कहा जाता है। वल्लभ सम्प्रदाय में मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, संध्या-आरती तथा शयन के नाम से ये कीर्तन-सेवाएं हैं। अष्टयाम हिन्दी का अपना विशिष्ट काव्य-रूप जो रीतिकाल में विशेष विकसित हुआ। इसमें कथा-प्रबन्ध नहीं होता परंतु कृष्ण या नायक की दिन-रात की चर्या-विधि का सरस वर्णन होता है।

स्वाद और सेहत से भरा भोजन

● गेहूं के आटे में मौसमी सब्जियाँ या पकी हुई छिलके वाली दाल डालकर स्वादिष्ट परांठे बना सकते हैं व इसे दही व रायते के साथ खा सकते हैं यह संपूर्ण पौष्टिक आहार होगा।

● गेहूं का दलिया या चावल की खिचड़ी बनाते समय उसमें गाजर, मटर, भुट्टे के दाने, धनिया, प्याज आदि डालिए स्वाद भी बढ़ जाएगा और पौष्टिक, विटामिनस, कार्बोहाइड्रेट और रेशे की मात्रा भी बढ़ जाएगी।

● बेसन गट्टे बनाते समय पत्तेदार सब्जियाँ या लौकी किस कर मिला देने से गट्टे की सब्जी की पौष्टिकता बढ़ जाएगी।

● कढ़ी में मटर या ताजी चवला फली के दाने या हरे चने, पालक, धनिया या मिक्स सब्जियाँ डाल सकते हैं। मीठा नीम बीमारियों से हमारी रक्षा करता है।

● टमाटर, गाजर, अमरूद, अंगूर, धनिया, पोदीना, करौंदा, कैरी आदि की चटनी बनाकर हम विटामिन सी एवं फूट शर्करा प्राप्त कर सकते हैं।

पाक्षिक पंचांग

26 जनवरी से 8 फरवरी 2026 तक

विक्रम संवत् 2082

माघ शुक्ल 8 से फाल्गुन कृष्ण 7 तक

दि.	माह	वार	तिथि/त्यौहार
26	जनवरी	सोम	माघ शुक्ल 8 गणतंत्र दिवस
27	जनवरी	मंगल	----- 9 महानंदा नवमी
28	जनवरी	बुध	----- 10
29	जनवरी	गुरु	----- 11 जया/अजा एकादशी व्रत
30	जनवरी	शुक्र	----- 12 प्रदोष व्रत
31	जनवरी	शनि	----- 13/14
1	फरवरी	रवि	----- 15 माघी पूर्णिमा/स्ना.दा. पूर्णिमा
2	फरवरी	सोम	फाल्गुन कृष्ण 1
3	फरवरी	मंगल	----- 2
4	फरवरी	बुध	----- 3
5	फरवरी	गुरु	----- 4 गणेश चतुर्थी व्रत
6	फरवरी	शुक्र	----- 5
7	फरवरी	शनि	----- 6
8	फरवरी	रवि	----- 7

लेमनग्रास की खेती से बदल रही छोटे किसानों की किस्मत



स्थापित करने की योजना है। आज गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले के 4 क्लस्टरों खरड़ी, पंडरी, अमारू और हरडी के 123 किसान लगभग 230 एकड़ में लेमनग्रास की खेती कर रहे हैं।

पौधों से कई वर्षों

रायपुर। लेमनग्रास की खेती छोटे किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है, क्योंकि इसमें लागत कम, मुनाफा ज्यादा है और यह बंजर जमीन पर भी होती है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो रही है और वे आर्थिक रूप से सशक्त हो रहे हैं। यह फसल कीटों और जंगली जानवरों से सुरक्षित रहती है, एक बार लगाने पर कई सालों तक पैदावार देती है। छत्तीसगढ़ आदिवासी, स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिला अधिकतर वनों से घिरा हुआ क्षेत्र है, जहाँ अधिकांश किसानों के पास कम खेती योग्य भूमि है। उल्लेखनीय है कि किसानों की इस स्थिति को देखते हुए वन मंत्री श्री केदार कश्यप के निर्देशानुसार छत्तीसगढ़ आदिवासी, स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड के अध्यक्ष श्री विकास मरकाम के मार्गदर्शन में बोर्ड के द्वारा औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।

230 एकड़ में कर रहे हैं लेमनग्रास की खेती बोर्ड द्वारा क्लस्टर मॉडल के माध्यम से किसानों को समूह में जोड़ा गया। लेमनग्रास की बुवाई से पहले ही किसानों का तेल क्रय करने वाले उद्योगों के साथ अनुबंध कराया गया। इन उद्योगों द्वारा बोरवेल, खेत की जुताई, पौधारोपण, फेंसिंग तथा अन्य आवश्यक कार्यों के लिए अग्रिम वित्तीय सहायता दी गई। किसान फसल बेचने के बाद इस राशि को चरणबद्ध तरीके से वापस करते हैं साथ ही, बोर्ड द्वारा लेमनग्रास की स्लिप्स निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं और तेल निकालने के लिए आसवन संयंत्र (डिस्टिलेशन यूनिट) भी स्थापित किए गए। भविष्य में हर 50 किसानों पर एक संयंत्र

तक मिलती है फसल

गांव बहरी-जोरकी के किसान अगहन सिंह के पास केवल 35 डिसमिल (लगभग 1/3 एकड़) भूमि थी। कम जमीन होने के कारण उनकी आय सीमित थी। बोर्ड से प्रेरणा लेकर उन्होंने लेमनग्रास की खेती शुरू करने का फैसला किया। बोर्ड द्वारा उन्हें लेमनग्रास की स्लिप्स निःशुल्क प्रदान की गईं। लेमनग्रास की फसल केवल 4 महीने में तैयार हो जाती है। पहली कटाई में 4 लीटर तेल प्राप्त होता है जिसका बाजार मूल्य 1000 रुपए प्रति लीटर है जिससे कुल आय 4,000 रुपए होगी। इसी तरह दूसरी कटाई (अगले 4 महीने बाद) से 8 लीटर तेल प्राप्त होगा जिससे कुल आय 8,000 रुपये होगी। इस तरह किसान को एक वर्ष में कुल आय 12,000 रुपये और यह आय आने वाले 5 वर्षों तक लगातार मिलती रहेगी, क्योंकि एक बार लगाए गए पौधों से कई वर्षों तक फसल मिलती है।

लेमनग्रास की खेती से बन रहे हैं आत्मनिर्भर अगहन सिंह जैसे कई किसान आज लेमनग्रास की खेती से आत्मनिर्भर बन रहे हैं। इस मॉडल की खासियत यह है कि किसान शून्य बजट में खेती शुरू कर सकते हैं और उन्हें तत्काल आय मिलनी शुरू हो जाती है।

लेमनग्रास छोटे किसानों के लिए वरदान लेमनग्रास की खेती से किसानों की आय में वृद्धि, रोजगार के स्थानीय अवसर, पलायन में कमी और छोटे किसानों की आर्थिक मजबूती जैसे सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। गौरेला-पेंड्रा-मरवाही में यह कहना बिल्कुल उचित है कि लेमनग्रास की खेती छोटे किसानों के लिए एक वरदान बनकर उभर रही है।

सूरज की रोशनी से बिजली बिल में मिली राहत



बलरामपुर। पस्ता ग्राम निवासी उदय गुप्ता ने प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का लाभ लेकर अपने घर की छत पर 3 किलोवाट क्षमता का रूफटॉप सोलर पैनल स्थापित कराया है। इससे उदय गुप्ता के घर में निर्बाध बिजली उपलब्ध हो रही है, साथ ही बिजली बिल में भी कमी आई है। उदय गुप्ता बताते हैं कि पहले हर महीने बिजली

इंस्टॉलेशन तक की प्रक्रिया सरल और आसान रही। विभागीय अधिकारियों और तकनीकी टीम द्वारा समय-समय पर मार्गदर्शन भी दिया गया। गौरतलब है कि पीएम सूर्यघर बिजली पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अच्छी पहल है। सौर ऊर्जा के उपयोग से प्रदूषण कम होता है और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा मिल रहा है।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि



कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि



कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-
बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रेक्टर, ट्राली, थेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज • औषधीय फसल
- **विज्ञापन दर** - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण

साइज : फिक्स साइज- 8 x 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेक्टर, तीर्थ यात्राएँ, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएँ, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएँ, चिकित्सक, एग्री वलीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat @krishakjagatindia @krishak_jagat



कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर



वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक

- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि

⇒ वार्षिक रु. 600/- ⇒ दो वर्ष रु. 1000/-
⇒ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह □ भोपाल □ जयपुर □ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम
ग्रामपो.
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें :
वि.ख. तह.
जिला पिन [] [] [] [] राज्य
शिक्षा भूमि उच्च
ट्रेक्टर/मॉडल फोन/मो.
ई-मेल
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

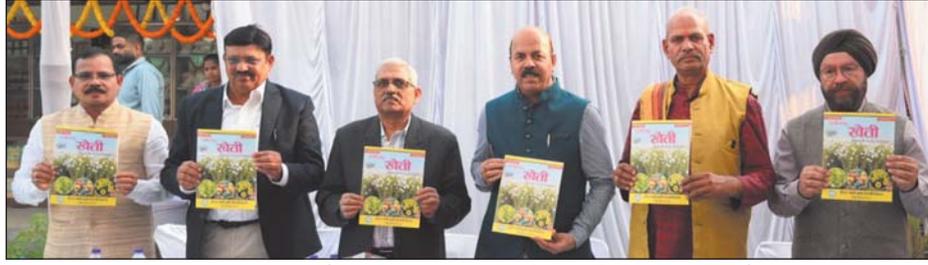
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

प्रसार प्रबंधक **कृषक जगत**

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो. : 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952



कृषि विवि में उत्पाद विक्रय केन्द्र का शुभारंभ



रायपुर। 39वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर में उत्पाद विक्रय केन्द्र के नये स्वरूप का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर डॉ. गिरीश चंदेल, कुलपति इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री ज्ञानेन्द्र मणि, मुख्य महाप्रबंधक नाबार्ड एवं श्री सुरेश चंद्रवंशी, अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राज्य कृषक कल्याण परिषद उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. एस.एस. टूटेजा, निदेशक विस्तार सेवाएं ने बताया कि इस केन्द्र के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्रों से तकनीकी सहायता प्राप्त एफपीओ और स्वः सहायता समूहों के उत्पादों को विक्रय के लिये एक स्थान प्रदाय किया जा रहा है। इस केन्द्र के माध्यम से विश्वविद्यालय के उत्पाद, भी विक्रय किये जायेंगे। श्री सुरेश चंद्रवंशी, अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राज्य कृषक कल्याण परिषद छत्तीसगढ़ शासन ने बताया कि समय पर उपलब्धता के साथ उत्पाद गुणवत्ता भी ध्यान देना चाहिये एवं इसके साथ ही राज्य में अन्य जिलों में भी इस तरह के उत्पाद विक्रय केन्द्र खोले जाना चाहिये।

डॉ. गिरीश चंदेल, कुलपति ने बताया कि

कॉमर्शियल बिजनेस मॉडल के आधार पर ग्रासरी और नॉन ग्रासरी आयटम के साथ विश्वविद्यालय के उत्पाद भी स्थानीय लोगों को प्राप्त होंगे। प्रोडक्ट की गुणवत्ता एवं सप्लाय चैन मनेजमेंट का भी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा विशेष ध्यान दिया जायेगा। विक्रय हेतु उपलब्ध उत्पाद के प्रचार प्रसार का भी प्रयास किया जा रहा है। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री ज्ञानेन्द्र मणी, मुख्य महाप्रबंधक नाबार्ड ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा कृषकों को बाजार उपलब्ध कराया जाना एक महत्वपूर्ण कार्य है।

इस कार्यक्रम में डॉ. वी.के. त्रिपाठी, संचालक अनुसंधान, डॉ. संजय शर्मा, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, डॉ. (श्रीमती) आरती गुहे, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, डॉ. अजय वर्मा, अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, डॉ. ए.के. दवे, निदेशक शिक्षण, डॉ. कपिल देव दीपक, कुलसचिव एवं विभागाध्यक्ष, प्राध्यापकगण एवं उत्पादक एफपीओ के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ खेती के तिलहन विशेषांक एवं न्यूज लेटर का भी विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. गौतम राय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र रायपुर ने आभार प्रदर्शन किया।

क्रॉपलाइफ इंडिया ने अनाधिकृत कीटनाशकों की बिक्री पर चिंता जताई

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 17 अनुसंधान एवं विकास संचालित फसल सुरक्षा कंपनियों के प्रमुख संगठन क्रॉपलाइफ इंडिया ने गत दिनों नई दिल्ली में आयोजित फसल सुरक्षा उत्पादों की ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर बिक्री संबंधी राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान इस मुद्दे को उठाते हुए ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से अनाधिकृत फसल सुरक्षा उत्पादों की अनियंत्रित बिक्री पर गंभीर चिंता व्यक्त की और कीटनाशकों की ऑनलाइन बिक्री में नियामक पर्यवेक्षण, प्रवर्तन दायित्वों और जवाबदेही को तत्काल मजबूत करने का आह्वान किया।

कृषि आयुक्त भारत सरकार डॉ. पी. के. सिंह ने कहा कि ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म द्वारा विक्रेताओं के जीएसटी दस्तावेजों जैसे बुनियादी अनुपालन जांच ऑनलाइन खतरनाक कृषि इनपुट की बिक्री के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती हैं। उन्होंने मजबूत गुणवत्ता आश्वासन, पता लगाने की क्षमता और आपूर्ति श्रृंखला जवाबदेही की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि इन मुद्दों



पर कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2025 के तहत विचार किया जाना चाहिए। जबकि भारत सरकार के सीआईबी एवं आरसी सचिव डॉ. सुभाष चंद ने कहा कि जहां एक ओर ग्रामीण भारत में डिजिटलीकरण और ई-कॉमर्स तेजी से फैल रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इनसे नए जोखिम भी पैदा हो रहे हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कीटनाशक खतरनाक उत्पाद हैं और ऑनलाइन बिक्री बढ़ने के साथ-साथ गुणवत्ता, अनुपालन और किसान सुरक्षा की जिम्मेदारी प्लेटफॉर्म और निर्माताओं दोनों को साझा करनी चाहिए। ओएनडीसी के कृषि क्षेत्र प्रमुख श्री रविशंकर ने किसानों को असली उत्पादों की पहचान करने और मिलावटी उत्पादों के

जोखिम को कम करने में मदद करने के लिए बेहतर सूचीकरण, परामर्श संबंधी जानकारी और पता लगाने की क्षमता की आवश्यकता पर बल दिया।

सम्मेलन में क्रॉपलाइफ इंडिया के अध्यक्ष श्री अंकुर अग्रवाल ने कहा, 'हम ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर कीटनाशकों की बिक्री के खिलाफ नहीं हैं। यह चर्चा इस बात को सुनिश्चित करने के लिए है, कि नियामक और प्रवर्तन ढांचे डिजिटल वाणिज्य की वास्तविकताओं के अनुरूप विकसित हों। अनधिकृत उत्पादों से निपटना नीति निर्माताओं और फसल सुरक्षा उद्योग की साझा प्राथमिकता है और किसानों की सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और उपभोक्ताओं के विश्वास के लिए महत्वपूर्ण है।'



● मधुकर पवार, मो.: 8770218785

प्रश्न यह नहीं है कि उर्वरक कितना उपलब्ध था, बल्कि असली सवाल यह है कि फिर किसानों को समय पर खाद क्यों नहीं मिली? क्यों उन्हें कई दिनों तक इंतजार करना पड़ा और रात-रात भर उर्वरक वितरण केंद्रों के बाहर कतारों में खड़ा रहना पड़ा?

जब दावे और जमीनी हकीकत टकराए : सरकार का कहना है कि भारतीय रेलवे ने उर्वरक रैकों की ढुलाई को प्राथमिकता दी, बंदरगाहों पर आयातित उर्वरकों की त्वरित अनलोडिंग हुई और भंडारण व वितरण की व्यवस्था भी सुदृढ़ की गई। उर्वरक कंपनियों के साथ नियमित समीक्षा बैठकों और सतत निगरानी के दावे भी किए गए। यदि ये सभी व्यवस्थाएँ वास्तव में प्रभावी थीं, तो फिर मध्यप्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ सहित अनेक राज्यों में किसानों को खाद के लिए भटकना क्यों पड़ा?

खरीफ-रबी दोनों में संकट : हकीकत यह है कि खरीफ और रबी-दोनों ही मौसमों में किसानों

को उर्वरक की भारी किल्लत झेलनी पड़ी। कई स्थानों पर कालाबाजारी की खबरें सामने आईं और मजबूरी में किसानों को निजी दुकानों से अधिक कीमत चुकाकर खाद खरीदनी पड़ी। विडंबना यह है कि इसी दौरान केंद्र और राज्य सरकारें लगातार यह दोहराती रहीं कि 'खाद की कोई कमी नहीं है।'

समस्या कहाँ है ? : जब वास्तव में खाद की कोई कमी नहीं थी, तो फिर किसानों तक खाद पहुँचाने में देरी क्यों हुई? यह विरोधाभास साफ संकेत देता है कि समस्या उत्पादन या आयात की नहीं, बल्कि परिवहन, भंडारण और वितरण तंत्र की गंभीर विफलता है। यदि उर्वरक अधिक मात्रा में उपलब्ध था, तो उसे समय पर सभी जिलों और ब्लॉकों तक पहुँचाने में लापरवाही क्यों बरती गई?

जवाबदेही तय क्यों नहीं हुई ? : क्या यह प्रशासनिक उदासीनता नहीं है कि गोदामों में उर्वरक भरा रहा और किसान बोनी के समय खाद के लिए तरसता रहा? इस अव्यवस्था का सबसे बड़ा

भरपूर उर्वरक के दावे और जमीनी हकीकत!

केंद्र सरकार यह दावा कर रही है कि वर्ष 2024-25 में देश में उर्वरकों की रिकॉर्ड उपलब्धता सुनिश्चित की गई और किसानों को पूरे वर्ष किसी प्रकार की कमी का सामना नहीं करना पड़ा। सरकारी आंकड़ों के अनुसार जहाँ देश की अनुमानित आवश्यकता 152.50 करोड़ बैग (722.04 लाख टन) थी, वहीं 176.79 करोड़ बैग (834.64 लाख टन) उर्वरक उपलब्ध कराया गया—अर्थात् आवश्यकता से लगभग 24 करोड़ बैग अधिक।

खामियाजा किसानों को उठाना पड़ा। जिन जिलों में खाद की कमी रही और समय पर किसानों को उर्वरक उपलब्ध नहीं कराया गया, वहाँ संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय होनी चाहिए थी। लेकिन हर बार की तरह इस व्यवस्था-विफलता को आंकड़ों की आड़ में ढंक दिया गया।

तकनीक के दौर में भी लाइन में किसान : सरकार डिजिटल पोर्टल, आधुनिक संचार माध्यमों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बात करती है, लेकिन जमीनी सच्चाई यह है कि किसान आज भी खाद के लिए लाइन में खड़ा होने को मजबूर है। तकनीक के इस दौर में भी यदि किसान उर्वरक के लिए दर-दर भटक रहा है, तो यह पूरी व्यवस्था पर एक गंभीर प्रश्नचिह्न है।

समाधान क्या हो ? : समाधान केवल नए दावे करने में नहीं, बल्कि मांग-आधारित वितरण प्रणाली, जिला-ब्लॉक स्तर पर अनिवार्य न्यूनतम स्टॉक,

और वितरण से जुड़े आंकड़ों को सार्वजनिक करने में है। सहकारी समितियों और एफपीओ को मजबूत कर निजी मुनाफाखोरी पर प्रभावी रोक लगानी होगी। सबसे अहम यह सुनिश्चित करना होगा कि सरकारी दावे खेत की मेड़ पर भी सच साबित हों।

आखिरी सवाल : किसान को यह भरोसा मिलना चाहिए कि बोनी के समय उसे खाद के लिए अपमानजनक कतारों में खड़ा नहीं होना पड़ेगा। जब तक उर्वरकों की 'रिकॉर्ड उपलब्धता' समय पर किसानों के हाथों तक नहीं पहुँचती, तब तक ऐसे दावे केवल सरकारी कागज़ों की उपलब्धि बनकर ही रहेंगे। केंद्र और राज्य सरकारों को अब उर्वरकों की उपलब्धता, मांग, परिवहन, भंडारण और वितरण की समग्र समीक्षा कर पिछली कमियों को दुरुस्त करना होगा, ताकि आने वाले खरीफ और रबी के मौसम में किसानों को उनकी मांग के अनुसार समय पर खाद उपलब्ध हो सके।

चम्बल फर्टिलाइजर्स की उप विक्रेता गोष्ठी



कबीरधाम। चम्बल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लि. द्वारा उप विक्रेता गोष्ठी कबीरधाम में गतदिनों आयोजित की गई। इसमें विशेष अतिथि श्री एस.के. दुबे (सीनियर रीजनल मैनेजर) थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में सहायक प्रबंधक श्री योगेश कवहर द्वारा विशेष अतिथि, डीलर्स और रिटेलर्स का स्वागत कर कृषि के भौगोलिक पहलुओं पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में कंपनी के सीनियर रीजनल मैनेजर श्री दुबे ने कंपनी की विरासत, संगठन के सिद्धांतों और मूल्यों की जानकारी दी। साथ ही सीपीसी और एस.एन. बिजनेस के स्कोप के बारे में बताया।

उन्होंने व्यापारियों की मानसिकता को सिर्फ बल्क फर्टिलाइजर से हटाकर सम्पूर्ण एग्री इनपुट बिजनेस की ओर शिफ्ट करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पीओएस सेल्स की महत्ता क्यों सर्वोपरि है, इस पर विशेष जानकारी दी।

श्री दुबे ने कंपनी के प्रोडक्ट पोर्टफोलियो पर चर्चा की और भरोसा दिलाया कि जो भी जरूरत होगी, कंपनी पूरी करेगी। उन्होंने SwH और Hello Uttam के बारे में बताया। साथ ही कंपनी की प्रोफाइल, मिशन और विजन पर प्रकाश डाला।

इफको के नैनो उर्वरक पर किसान सभा का आयोजन

कांकेर। आदिम जाति सेवा सहकारी - बड़े कापसी, जिला कांकेर में इफको के तत्वावधान में नैनो उर्वरक उपयोग आधारित किसान सभा कार्यक्रम का सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन किया गया। कार्यक्रम में इफको राज्य कार्यालय रायपुर से श्री दिनेश गांधी, उप प्रबंधक (कृषि सेवा) मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन इफको के क्षेत्रीय अधिकारी, श्री लाल बहादुर सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को आधुनिक, वैज्ञानिक एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि तकनीकों से अवगत कराना रहा। कार्यक्रम के दौरान श्री दिनेश गांधी द्वारा किसानों को इफको का विस्तृत परिचय देते हुए बताया गया कि परंपरागत यूरिया के अत्यधिक एवं असंतुलित उपयोग से पौधों की वृद्धि, भूमिगत जल की गुणवत्ता तथा पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके विकल्प के रूप में उन्होंने इफको नैनो यूरिया के लाभों को विस्तार से समझाया तथा इसके प्रयोग की



विधि, छिड़काव का उपयुक्त समय एवं फसल की विभिन्न अवस्थाओं में उपयोग के बारे में व्यावहारिक जानकारी दी। उन्होंने नैनो डीएपी के उपयोग पर प्रकाश डालते हुए इसके लाभ, प्रयोग का समय, बीज उपचार, जड़ उपचार तथा पत्तियों पर छिड़काव की संपूर्ण प्रक्रिया को सरल भाषा में समझाया। साथ ही नैनो जिंक, नैनो कॉपर एवं अन्य नैनो उर्वरकों के महत्व, आवश्यकता, अनुशासित मात्रा, सही उपयोग विधि एवं जार टेस्ट की प्रक्रिया की जानकारी देकर किसानों को सुरक्षित एवं प्रभावी उपयोग के लिए जागरूक किया गया। कार्यक्रम में यह भी बताया

गया कि यूरिया, डीएपी एवं पोटाश के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी में पोषक तत्वों का असंतुलन उत्पन्न हो जाता है, जिससे फसल उत्पादन एवं मृदा स्वास्थ्य प्रभावित होता है। इस समस्या के समाधान हेतु मृदा पोषक तत्व उपयोग दक्षता बढ़ाने के उपायों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त किसानों को मक्का फसल में पोषक तत्वों की कमी से होने वाली बीमारियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही यह भी बताया गया कि मक्का की फसल में किस पोषक तत्व की आवश्यकता कब होती है तथा उचित समय पर संतुलित

पोषण किस प्रकार देने से फसल में आने वाली बीमारियों से बचाव किया जा सकता है।

विशेषज्ञ द्वारा यह समझाया गया कि सही समय पर सही मात्रा में पोषक तत्वों के उपयोग से मक्का फसल की वृद्धि बेहतर होती है, उत्पादन बढ़ता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। इस किसान सभा में 50 से अधिक किसानों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को उत्पादन लागत में कमी, मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, पर्यावरण संरक्षण तथा टिकाऊ एवं लाभकारी कृषि अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

कृषक जगत

डायरी - 2026

बुकिंग प्रारंभ

नए आकार, नए कलेवर में (एजीक्यूटिव डायरी)



कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ

वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम

प्रमुख आकर्षण

कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी
प्रमुख फसलों की नई किस्मों के साथ सम्पूर्ण जानकारी
कृषि विभाग के महत्वपूर्ण अधिकारियों के नाम, फोन नंबर
कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी
कृषि इनपुट से संबंधित नए उत्पादों की जानकारी
बागवानी, पशु चिकित्सा, कृषि यंत्र की संपूर्ण जानकारी
पंचांग, कैलेंडर, त्यौहारों, लोक मेलों की जानकारी

कृषि आदान-यंत्र निर्माताओं, विक्रेताओं, ट्रैक्टर डीलरों की नववर्ष उपहार के लिए पहली पसंद

कृषक जगत के नियमित सदस्यों के लिए डायरी फ्री

25 लाख पाठकों में सर्वधिक लोकप्रिय

अपना उपहार सुनिश्चित पाने के लिये संपर्क करें

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 600

6262166222

*नियम व शर्तें लागू, डायरी 2026 मूल्य रु 200/-

मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी

विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें

- इंदौर - सचिन बोन्द्रिया : 9826021837
- भोपाल - अजय बोन्द्रिया : 9826255861
- इंदौर कार्यालय : 9826024864
- रायपुर - प्रेमप्रकाश सुल्लेरे : 9826255862
- नई दिल्ली व जयपुर - निमिष गंगराड़े : 7387422952
- ई-मेल : info@krishakjagat.org
- वेबसाइट : www.krishakjagat.org